RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 312
दि. 16.03.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

उमरेठ विधानसभा सीट पर 23 अप्रैल को उपचुनाव, 4 मई को मतगणना; गोविंद परमार के निधन से खाली हुई सीट

(जीएनएस)। नई दिल्ली/अहमदाबाद। Election Commission of India ने गुजरात की महत्वपूर्ण मानी जाने वाली उमरेठ विधानसभा सीट पर उपचुनाव की घोषणा कर दी है। आयोग के अनुसार इस सीट पर मतदान 23 अप्रैल को कराया जाएगा, जबकि मतों की गिनती 4 मई को होगी। चुनावी प्रक्रिया को पूरा करने की अंतिम तिथि 6 मई निर्धारित की गई है। यह सीट पूर्व विधायक Govind Parmar के निधन के बाद रिक्त हुई है, जिसके चलते निर्वाचन आयोग को उपचुनाव कराने का फैसला लेना पड़ा।

मुख्य चुनाव आयुक्त Gyanesh Kumar ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में उपचुनाव के कार्यक्रम की घोषणा करते हुए बताया कि आयोग ने सभी प्रशासनिक तैयारियों और संवैधानिक प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए यह कार्यक्रम तय किया है। आयोग का कहना है कि चुनाव पूरी पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ कराया जाएगा तथा मतदाताओं को सुरक्षित और व्यवस्थित मतदान की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

गुजरात के Anand district में स्थित उमरेठ विधानसभा क्षेत्र राज्य की राजनीति में एक महत्वपूर्ण सीट माना जाता है। इस क्षेत्र का राजनीतिक इतिहास भी काफी रोचक रहा है और यहां के मतदाता अक्सर स्थानीय मुद्दों और विकास कार्यों के आधार पर मतदान करते रहे हैं। हाल ही में विधायक गोविंद परमार के निधन के बाद यह सीट खाली हो गई थी, जिसके बाद उपचुनाव की प्रक्रिया शुरू की गई। बताया गया है कि गोविंद परमार का 6 मार्च को बीमारी के कारण निधन हो गया था। उन्हें अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद अस्पताल ले जाया

गया था, जहां उपचार के दौरान उनका निधन हो गया। उनके निधन के बाद विधानसभा की यह सीट संवैधानिक रूप से रिक्त घोषित कर दी गई और चुनाव आयोग ने उपचुनाव कराने का फैसला लिया। परमार के निधन से स्थानीय राजनीति में भी शोक की लहर फैल गई थी, क्योंकि उन्हें क्षेत्र का सक्रिय और जनसंपर्क रखने वाला नेता माना जाता था।

गोविंद परमार का राजनीतिक सफर भी काफी दिलचस्प रहा। वे Bharatiya Janata Party के टिकट पर 2017 और 2022 दोनों विधानसभा चुनावों में उमरेठ सीट से विजयी हुए थे। लगातार दो बार विधायक चुने जाने के कारण क्षेत्र में उनकी मजबूत राजनीतिक पकड़ मानी जाती थी। स्थानीय स्तर पर उन्होंने कई विकास योजनाओं और जनहित के मुद्दों को उठाया था, जिससे उन्हें क्षेत्र में लोकप्रियता भी मिली।

हालांकि उनके राजनीतिक जीवन की शुरुआत निर्दलीय नेता के रूप में हुई थी। शुरुआती दौर में उन्होंने एक कार्यकाल के लिए स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीतकर विधानसभा में अपनी पहचान बनाई थी। उस समय वे गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री Shankersinh Vaghela के नेतृत्व वाली सरकार में कृषि मंत्रालय का दायित्व भी संभाल चुके थे। बाद में उन्होंने भाजपा का दामन थाम लिया और पार्टी के प्रमुख नेताओं में शामिल हो गए। उमरेठ सीट पर उपचुनाव की घोषणा के बाद राज्य की राजनीतिक गतिविधियां भी तेज हो गई हैं। भाजपा ने स्पष्ट संकेत दिया है कि वह इस सीट को बरकरार रखने के लिए पूरी ताकत से चुनाव लड़ेगी। पार्टी के राज्य मुख्य प्रवक्ता Anil Patel ने कहा कि गोविंद परमार एक लोकप्रिय नेता थे और उन्होंने क्षेत्र के लोगों के लिए लगातार काम किया। उनके निधन से पार्टी और क्षेत्र दोनों को बड़ी क्षति हुई है। अनिल पटेल ने कहा कि आगामी उपचुनाव में पार्टी पूरी मजबूती के साथ मैदान में उतरेगी और जनता के समर्थन से एक बार फिर इस सीट पर जीत हासिल करने का प्रयास करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा का राज्य और जिला संगठन मिलकर चुनाव अभियान को आगे बढ़ाएगा। इस अभियान का नेतृत्व राज्य के मुख्यमंत्री Bhupendra Patel और राज्य भाजपा अध्यक्ष Jagdish Vishwakarma करेंगे।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह उपचुनाव केवल एक सीट का चुनाव नहीं होगा, बल्कि राज्य की राजनीतिक ताकत और जनसमर्थन की परीक्षा भी माना जाएगा। हालांकि गुजरात में भाजपा की स्थिति काफी मजबूत मानी जाती है, फिर भी उपचुनाव अक्सर स्थानीय मुद्दों और उम्मीदवारों की लोकप्रियता के आधार पर दिलचस्प हो जाते हैं।

चुनाव आयोग ने यह भी बताया कि उमरेठ सीट के साथ-साथ देश के विभिन्न राज्यों की सात अन्य विधानसभा सीटों पर भी उपचुनाव कराए जाएंगे। इन सीटों पर भी लगभग इसी समय मतदान और मतगणना की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। आयोग का कहना है कि सभी राज्यों में चुनाव शांतिपूर्ण और निष्पक्ष तरीके से कराने के लिए सुरक्षा और प्रशासनिक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। उमरेठ क्षेत्र में चुनावी सरगर्मियां अब धीरे-धीरे तेज होने की संभावना है। राजनीतिक दल अपने संभावित उम्मीदवारों के चयन और चुनावी रणनीति को अंतिम रूप देने में जुट गए हैं। आने वाले दिनों में यहां प्रचार अभियान, जनसभाएं और राजनीतिक बयानबाजी भी बढ़ने की उम्मीद है।

इस बीच स्थानीय मतदाताओं के बीच भी चर्चा शुरू हो गई है कि इस बार उपचुनाव में कौन सा उम्मीदवार उनकी उम्मीदों पर खरा उतरेगा। क्षेत्र के विकास, बुनियादी सुविधाओं और स्थानीय समस्याओं को लेकर जनता की अपेक्षाएं भी चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। फिलहाल सभी की निगाहें चुनावी प्रक्रिया पर टिकी हुई हैं, जो अप्रैल के अंतिम सप्ताह में मतदान और मई की शुरुआत में परिणामों के साथ एक नए राजनीतिक अध्याय का फैसला करेगी।

यूएई में फर्जी वीडियो फैलाने वालों पर बड़ी कार्रवाई, 19 भारतीय समेत 35 गिरफ्तार

(जीएनएस)। अबू धाबी। पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के बीच United Arab Emirates की सरकार ने सोशल मीडिया पर फर्जी और भ्रामक वीडियो फैलाने के आरोप में बड़ी कार्रवाई करते हुए 35 लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए लोगों में 19 भारतीय नागरिक भी शामिल बताए गए हैं। अधिकारियों का कहना है कि इन लोगों ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से ऐसे वीडियो और पोस्ट प्रसारित किए, जिनसे देश में अफरा-तफरी फैलने और सुरक्षा व्यवस्था प्रभावित होने की आशंका थी।

सरकारी अधिकारियों के अनुसार यह कार्रवाई उन लोगों के खिलाफ की गई है जिन्होंने जानबूझकर झूठी जानकारी, छेड़छाड़ किए गए वीडियो और कृत्रिम तकनीक से तैयार किए गए दृश्य सोशल मीडिया पर साझा किए। जांच एजेंसियों का कहना है कि इन वीडियो का उद्देश्य लोगों के बीच भ्रम और भय पैदा करना था, जिससे देश की स्थिरता और सामाजिक व्यवस्था पर असर पड़ सकता था।

जांच के दौरान गिरफ्तार किए गए लोगों को तीन अलग-अलग समूहों में बांटा गया है, जिन्होंने अलग-अलग तरीके से फर्जी सामग्री फैलाने का काम किया। पहले समूह में 10 लोग शामिल हैं। इन पर आरोप है कि उन्होंने वास्तविक वीडियो क्लिप में अतिरिक्त कमेंट और साउंड जोड़कर ऐसा माहौल बनाया मानो देश पर हमला हो गया हो या कोई बड़ा सुरक्षा संकट पैदा हो गया हो। इस समूह में पांच भारतीय नागरिकों के अलावा एक पाकिस्तानी, एक नेपाली, दो फिलिपीनी और एक मिस्री नागरिक शामिल बताए गए हैं।

दूसरे समूह में सात लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इन पर आरोप है कि उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई तकनीक की मदद से बनाए गए वीडियो और अन्य देशों में हुई घटनाओं के वीडियो को यूएई का बताकर सोशल मीडिया पर साझा किया। जांच एजेंसियों के अनुसार इन वीडियो को इस तरह पेश किया गया था कि देखने वालों को लगे कि ये घटनाएं यूएई के भीतर घट रही हैं। इस समूह में पांच भारतीय नागरिकों के अलावा एक नेपाली और एक बांग्लादेशी नागरिक शामिल हैं।

तीसरे समूह में छह लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इन लोगों पर विदेशी सैन्य कार्रवाइयों और कुछ अंतरराष्ट्रीय नेताओं की प्रशंसा करते हुए पोस्ट और वीडियो साझा करने का आरोप है। अधिकारियों का कहना है कि इस प्रकार की सामग्री से सामाजिक तनाव और अस्थिरता की स्थिति पैदा हो सकती थी। इस समूह में पांच भारतीय नागरिक और एक पाकिस्तानी नागरिक शामिल बताए गए हैं।

इसके अतिरिक्त दो अन्य भारतीय नागरिकों पर भी इसी प्रकार की गतिविधियों में शामिल होने के आरोप लगाए गए हैं और उनके खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई की जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि इस पूरे मामले की जांच अभी जारी है और यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि इस नेटवर्क में और कितने लोग शामिल हो सकते हैं।

इस मामले पर यूएई के अटॉर्नी जनरल Hamad Saif Al Shamsi ने कहा कि देश की सुरक्षा और सामाजिक स्थिरता को प्रभावित करने वाली गलत सूचनाओं का प्रसार एक गंभीर अपराध है। उन्होंने स्पष्ट किया कि ऐसे मामलों में कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उनके अनुसार यदि आरोप सिद्ध होते हैं तो दोषियों को कम से कम एक वर्ष की जेल की सजा और लगभग एक लाख दिरहम तक का जुर्माना हो सकता है।

अधिकारियों ने यह भी बताया कि जांच के दौरान सामने आया है कि कुछ वीडियो में बच्चों की भावनाओं का भी इस्तेमाल किया गया था। इन वीडियो में झूठे तरीके से बड़े हमलों या संकट की स्थिति को दिखाया गया था, जिससे लोगों के बीच भय और अस्थिरता का माहौल बन सकता था। प्रशासन का मानना है कि इस प्रकार की गतिविधियां देश की सुरक्षा और सामाजिक व्यवस्था के लिए खतरा बन सकती हैं।

यूएई सरकार ने नागरिकों और निवासियों से अपील की है कि वे सोशल मीडिया पर किसी भी जानकारी को साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जांच अवश्य करें। अधिकारियों का कहना है कि आधुनिक तकनीक और एआई के कारण फर्जी वीडियो और तस्वीरें बनाना पहले की तुलना में कहीं अधिक आसान हो गया है, इसलिए लोगों को और अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है।

नेतन्याहू के निधन की अफवाहें झूठी साबित, कॉफी पीते दिखे इजरायली

(जीएनएस)। तेल अवीव। सोशल मीडिया पर इजरायल के प्रधानमंत्री Benjamin Netanyahu के निधन को लेकर फैल रही अफवाहों के बीच एक नया वीडियो सामने आया है, जिसमें वह पूरी तरह स्वस्थ और सुरक्षित नजर आ रहे हैं। वीडियो में नेतन्याहू एक शॉप में आराम से कॉफी पीते हुए दिखाई देते हैं और मुस्कुराते हुए अफवाहों का मजाक भी उड़ाते हैं। इस वीडियो के सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर फैल रही झूठी खबरों का खंडन हो गया है और स्पष्ट हो गया है कि उनके निधन की खबरें पूरी तरह भ्रामक थीं। वीडियो में नेतन्याहू हल्के-फुल्के अंदाज में कहते नजर आते हैं कि लोग कह रहे हैं कि "बीबी मर गया है।" इसके बाद वह सामने मौजूद लोगों से मजाकिया अंदाज में पूछते हैं कि क्या वे भी यही सवाल पूछ रहे हैं। इसके बाद वह अपने दोनों हाथ उठाकर दिखाते हैं और कहते हैं कि लोग चाहें तो उनकी उंगलियां भी गिन सकते हैं। उनके इस बयान से यह साफ संकेत मिलता है कि वे सोशल मीडिया पर फैली अफवाहों को गंभीरता से नहीं ले रहे और सहज भाव से उनका जवाब दे रहे हैं। दरअसल यह अफवाहें उस समय फैलनी शुरू हुईं जब नेतन्याहू ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का वीडियो साझा

किया था। उस वीडियो में वह ईरान से जुड़े हालिया घटनाक्रम और क्षेत्रीय तनाव पर बात कर रहे थे। कुछ सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं ने उस वीडियो के एक फ्रेम में उनके दाहिने हाथ की उंगलियों को लेकर दावा किया कि उसमें छह उंगलियां दिखाई दे रही हैं। इसके बाद कुछ लोगों ने इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई तकनीक से बने वीडियो की गड़बड़ी बताते हुए तरह-तरह की अटकलें लगाना शुरू कर दिया। इन अटकलों के आधार पर कुछ सोशल मीडिया अकाउंट्स ने यह अफवाह फैलानी शुरू कर दी कि नेतन्याहू के साथ कोई अनहोनी हो गई है और उनके वीडियो एआई तकनीक से तैयार किए जा रहे हैं। हालांकि इन दावों का कोई ठोस प्रमाण सामने नहीं आया था, फिर भी सोशल मीडिया पर यह चर्चा तेजी से फैल गई। इसी बीच सामने आए नए वीडियो ने इन सभी दावों और अफवाहों को पूरी तरह खारिज कर दिया।

वीडियो में नेतन्याहू ने केवल अफवाहों का जवाब ही नहीं दिया बल्कि देश के नागरिकों के लिए एक संदेश भी दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें कॉफी बेहद पसंद है और अपने देश के लोगों के प्रति उनका लगाव भी उतना ही गहरा है। उन्होंने इजरायली नागरिकों के साहस और धैर्य की सराहना करते हुए कहा कि कठिन परिस्थितियों में भी देश के लोग जिस मजबूती के साथ खड़े हैं, वही सरकार और सुरक्षा एजेंसियों की ताकत है।

उन्होंने यह भी कहा कि देश की सुरक्षा केवल सरकार या सेना की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि नागरिकों की जागरूकता और सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण है। नेतन्याहू ने कहा कि इजरायल के लोग, सुरक्षा बल और खुफिया एजेंसी Mossad मिलकर देश को मजबूत बनाते हैं।

प्रधानमंत्री ने नागरिकों से अपील की कि वे सामान्य जीवन जीने की कोशिश करें, लेकिन सुरक्षा संबंधी निर्देशों का पालन करना भी जरूरी है। उन्होंने लोगों से कहा कि वे ताजी हवा लेने के लिए बाहर जा सकते हैं, लेकिन हमेशा सुरक्षित शेल्टर के पास रहें और किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार रहें। उन्होंने नागरिकों से Israel Home Front Command के निर्देशों का पालन करने की भी अपील की। इस बीच क्षेत्रीय तनाव को लेकर भी बयान सामने आए हैं। ईरान की सैन्य संस्था Islamic Revolutionary Guard Corps (आईआरजीसी) ने दावा किया है कि उसने अमेरिका के तीन सैन्य ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन हमले किए हैं। साथ ही आईआरजीसी ने नेतन्याहू को लेकर कड़ी चेतावनी भी दी है और कहा है कि यदि वह अभी भी जीवित हैं तो उनका पीछा जारी रहेगा।

हालांकि इन दावों को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-अलग प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। इसी बीच इजरायल सरकार की ओर से स्पष्ट किया गया है कि प्रधानमंत्री पूरी तरह सुरक्षित हैं और सोशल मीडिया पर फैल रही खबरों का कोई आधार नहीं है। Prime Minister's Office of Israel ने भी आधिकारिक बयान जारी कर कहा कि सोशल मीडिया पर फैल रही नेतन्याहू के निधन की खबरें पूरी तरह झूठी हैं। कार्यालय ने लोगों से अपील की कि वे अपुष्ट खबरों पर विश्वास न करें और केवल आधिकारिक स्रोतों से मिली जानकारी पर ही भरोसा करें।

सूरत में गैस संकट गहराया, प्रवासी मजदूरों की घर वापसी शुरू; उद्योगों पर भी मंडराया असर

(जीएनएस)। सूरत। पश्चिम एशिया में बढ़ते युद्ध तनाव का असर अब देश के औद्योगिक शहरों तक महसूस किया जाने लगा है। गुजरात के प्रमुख औद्योगिक केंद्र Surat में कुकिंग गैस की आपूर्ति प्रभावित होने से हजारों प्रवासी मजदूरों की रोजमर्रा की जिंदगी मुश्किल होती जा रही है। गैस सिलेंडरों की कमी और बढ़ती कीमतों के कारण मजदूरों के सामने भोजन बनाना भी एक बड़ी चुनौती बन गया है। हालात ऐसे बन गए हैं कि कई मजदूर अपने गृह राज्यों की ओर लौटने लगे हैं, जिससे शहर के औद्योगिक ढांचे पर भी असर पड़ने की आशंका बढ़ गई है।

सूरत को लंबे समय से देश के सबसे बड़े औद्योगिक और व्यापारिक शहरों में गिना जाता है। यहां की टेक्सटाइल, हीरा प्रसंस्करण, निर्माण और छोटे उद्योगों की रीढ़ प्रवासी मजदूरों को माना जाता है। शहर में बड़ी संख्या में मजदूर Uttar Pradesh, Bihar, Odisha और West Bengal जैसे राज्यों से आकर काम करते हैं। इन मजदूरों की मेहनत से ही शहर के उद्योगों का पहिया लगातार घूमता रहता है।

लेकिन पिछले लगभग पंद्रह दिनों से कुकिंग गैस की आपूर्ति में आई कमी ने उनकी जीवनशैली को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है। मजदूरों का कहना है कि सामान्य दिनों में जो गैस सिलेंडर करीब 1200 रुपये में मिल जाता था, वही अब 2500 से 3000 रुपये तक देने के बाद भी आसानी से उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। कई जगहों

पर तो सिलेंडर मिलने की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं है, जिसके कारण लोगों को घंटों इंतजार करना पड़ रहा है।

कम आय में जीवन यापन करने वाले मजदूरों के लिए इतनी महंगी गैस खरीदना लगभग असंभव हो गया है। कई मजदूरों ने बताया कि वे पहले ही किराया, भोजन और अन्य खर्चों के बीच मुश्किल से गुजारा कर पाते हैं, ऐसे में गैस की कीमतों में अचानक हुई इतनी बड़ी बढ़ोतरी ने उनकी आर्थिक स्थिति को और भी कमजोर कर दिया है।

स्थिति यह हो गई है कि कई मजदूरों को सामूहिक रूप से भोजन बनाना पड़ रहा है या फिर वैकल्पिक तरीकों से खाना पकाने की कोशिश करनी पड़ रही है। हालांकि ये विकल्प भी लंबे समय तक संभव नहीं हैं। ऐसे में बड़ी संख्या में मजदूरों ने अपने गांव लौटना ही बेहतर समझा है, ताकि कम से कम परिवार के साथ रहकर जीवन यापन कर सकें। इस संकट का असर शहर के रेलवे स्टेशनों पर भी दिखाई देने लगा है। पिछले दो दिनों से Surat railway station और Udhna railway station पर यात्रियों की भीड़ बढ़ गई है। यहां बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूर अपने सामान के साथ अपने गृह राज्यों की ओर जाने वाली ट्रेनों का इंतजार करते दिखाई दे रहे हैं।

सुबह के समय चलने वाली Udhna–Danapur Express और लगभग साढ़े दस बजे रवाना होने वाली Tapti Ganga Express में बड़ी संख्या में मजदूर अपने घरों की ओर लौट रहे हैं। रेलवे स्टेशनों पर लंबी कतारें और भीड़ यह संकेत दे रही हैं कि संकट की स्थिति लगातार गंभीर होती जा रही है। रेलवे अधिकारियों के अनुसार अचानक बढ़ी इस भीड़ के कारण कई ट्रेनों में सामान्य से अधिक यात्री देखे जा रहे हैं। कई मजदूर बिना आरक्षण के भी यात्रा करने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि किसी तरह जल्द से जल्द अपने घर पहुंच सकें।

दूसरी ओर उद्योग जगत से जुड़े लोगों की चिंता भी बढ़ने लगी है। सूरत की टेक्सटाइल इंडस्ट्री में लाखों मजदूर काम करते हैं और इनमें से अधिकांश प्रवासी हैं। यदि मजदूरों की यह घर वापसी जारी रही तो उद्योगों को श्रमिकों की कमी का सामना करना पड़ सकता है। इससे उत्पादन और कारोबार दोनों पर असर पड़ने की आशंका है।

उद्योग संगठनों से जुड़े कुछ प्रतिनिधियों का कहना है कि यदि गैस आपूर्ति की समस्या जल्द हल नहीं हुई तो आने वाले दिनों में कई फैक्ट्रियों को उत्पादन घटाना पड़ सकता है। इससे न केवल उद्योग प्रभावित होंगे बल्कि शहर की आर्थिक गतिविधियों पर भी असर पड़ सकता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों का असर कई बार स्थानीय स्तर पर भी दिखाई देता है। मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव के कारण ऊर्जा आपूर्ति और व्यापारिक गतिविधियों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है, जिसका असर धीरे-धीरे विभिन्न देशों और शहरों तक पहुंच सकता है।

फिलहाल सूरत में रहने वाले प्रवासी मजदूरों की सबसे बड़ी चिंता रोजमर्रा का जीवन चलाने की है। उनके लिए भोजन पकाने जैसी बुनियादी जरूरत भी कठिन होती जा रही है। ऐसे में कई मजदूरों ने अस्थायी रूप से अपने घर लौटने का फैसला किया है। यदि स्थिति जल्द सामान्य नहीं हुई तो शहर के उद्योगों और श्रमिकों दोनों के सामने नई चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं।

आर्थिक आपदा बनता युद्ध, विश्व की अर्थव्यवस्था के समक्ष खतरा

> अमेरिका-इजरायल द्वारा ईरान पर हमले से वैश्विक ऊर्जा संकट गहरा गया है, जिससे तेल और गैस की कीमतें बढ़ रही हैं। होर्मुज जलमार्ग बाधित होने से आपूर्ति प्रभावित हुई है, जिससे विश्व अर्थव्यवस्था खतरे में है। भारत भी इससे प्रभावित है, हालांकि ईरान ने भारतीय जहाजों को अनुमति दी है।

अमेरिका ने इजरायल के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय कानूनों की अनदेखी करते हुए ईरान पर जो हमला किया, वह अमेरिकी कानूनों के हिसाब से भी अवैधानिक है। इस युद्ध के कारण विश्व में गैस और तेल का जो संकट पैदा गया है, उसके समाधान का कोई उपाय अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के पास नहीं दिखता। लगता है उन्होंने इस पर कोई विचार ही नहीं किया कि ईरान पर हमले और उसकी जवाबी कार्रवाई से पश्चिम एशिया से ऊर्जा आपूर्ति में जो बाधाएं खड़ी होंगी, उनसे कैसे निपटा जाएगा।

ईरान इजरायल के साथ खाड़ी के देशों में अमेरिकी सैनिक अड्डों पर भी हमले कर रहा है और उसने होर्मुज समुद्री मार्ग को भी बाधित कर रखा है, जहां से 20-30 प्रतिशत तेल और गैस की आपूर्ति होती है। ईरान ने होर्मुज मार्ग बंद करने और इस चेतावनी के बाद कि दुनिया 200 डालर प्रति बैरल तक तेल खरीदने के लिए तैयार रहे, यह कहा कि यहां से निकलने वाले जहाजों को हमारी नौसेना को सूचित करना होगा, लेकिन जब तक इस मार्ग से गैस और तेल की आपूर्ति निर्बाध ढंग से नहीं होने लगती, तब तक ऊर्जा संकट के समाधान को लेकर सुनिश्चित नहीं हुआ जा सकता।

चूंकि खाड़ी देश तेल-गैस की आपूर्ति होर्मुज से करते हैं, इसलिए वे ईरान के रवैये पर निर्भर हैं। स्वाभाविक रूप से भारत और चीन जैसे देशों को होर्मुज मार्ग बाधित होने से खासी परेशानी हो रही है, क्योंकि वे अपने ऊर्जा स्रोतों के लिए एक बड़ी हद तक खाड़ी के देशों पर आश्रित हैं। यह राहत की बात है कि भारतीय प्रधानमंत्री की ईरान के राष्ट्रपति और दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के बीच वार्ता के बाद ईरान ने संकेत दिए कि वह भारत के जहाजों को होर्मुज से आने देगा।

नई दिल्ली में ईरान के राजदूत ने भी भारत को मित्र देश बताते हुए ऐसे ही सकारात्मक संकेत दिए और दो भारतीय जहाजों को इस जल मार्ग से आने की इजाजत मिल भी गई, लेकिन यह अभी साफ नहीं कि भविष्य में सभी भारतीय जहाज होर्मुज से बिना किसी परेशानी के गुजरते रह सकते हैं या नहीं? खाड़ी के देशों में तेल और गैस का उत्पादन प्रभावित होने और वहां से उनकी आपूर्ति बाधित होते ही उनके दाम बढ़ने लगे हैं और पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था के समक्ष खतरा पैदा हो गया है। यह एक नई आर्थिक आपदा बन रहा है।

तेल, गैस, उर्वरकों पर निर्भर तमाम भारतीय उद्योगों के समक्ष भी संकट गहराने लगा है। कुछ तो बंद होने की कगार पर हैं या फिर अपना उत्पादन कम करने को विवश हैं। खाड़ी देशों से तेल और गैस की सप्लाई रुक जाने से भारत समेत विश्व भर में महंगाई बढ़ने के साथ ही बेरोजगारी पैदा होने का भी खतरा है। इस खतरे के लिए सीधे तौर पर अमेरिकी राष्ट्रपति ही उत्तरदायी हैं, जिन्होंने अपनी जिद और अहंकार में नतीजों की परवाह किए बिना इजरायल के साथ मिलकर ईरान पर हमला बोल दिया।

खाड़ी के देशों से तेल और गैस की आपूर्ति बाधित होने से देश में फिलहाल पेट्रोल और डीजल का संकट तो नहीं दिखाई दे रहा है, लेकिन रसोई गैस की किल्लत नजर आने लगी है। रेहड़ी वालों से लेकर रेस्त्रां और होटल तथा आम उपभोक्ता उसकी किल्लत बढ़ती देख रहे हैं। हालांकि पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी दावा कर रहे हैं कि तेल एवं गैस की कमी नहीं है, लेकिन जमाखोरों, कालाबाजारियों के कारण गैस का संकट खड़ा होता दिख रहा है। मुनाफाखोर इस संकट को अपने लिए एक अवसर के रूप में देख रहे हैं।

चूंकि गैस संकट पैदा होने का खतरा पैदा हो गया है, इसलिए आम लोग भी चिंतित हैं। इसका ही नतीजा है कि कई स्थानों पर रसोई गैस एजेंसियों के सामने लंबी-लंबी लाइनें दिख रही हैं। इससे लोग और अधिक आशंकित हो रहे हैं। विपक्षी दल इस आशंका को और हवा दे रहे हैं। हालांकि सरकार ने गैस की जमाखोरी और कालाबाजारी रोकने के लिए आवश्यक वस्तु अधिनियम लागू कर दिया है और हालात पर निगरानी के लिए एक समिति गठित कर दी है, पर अभी इन कदमों का सकारात्मक असर नहीं दिख रहा है। यह तब तक नहीं दिखेगा, जब तक राज्य सरकारें गैस की जमाखोरी और कालाबाजारी के खिलाफ सख्ती नहीं बरततीं। यह अच्छा हुआ कि सरकार ने राज्यों को पीडीएस के तहत अतिरिक्त केरोसिन जारी करने का फैसला किया।

ईरान पर और हमले की धमकियों के बीच अमेरिका ने भारत समेत अन्य देशों को रूस से तेल खरीदने पर अपनी आपत्ति हटा ली है। यह उसकी मजबूरी को ही दर्शाता है। भारत सरकार रूस से तेल खरीद बढ़ाने के साथ कुछ अन्य देशों से तेल-गैस खरीद के जतन कर रही है, पर जब तक ये सौदे हो नहीं जाते और तेल-गैस आपूर्ति का रास्ता साफ नहीं होता, तब तक राहत की सांस नहीं ली जा सकती। भारत उस वेनेजुएला से भी तेल खरीद रहा है, जहां बीते दिनों अमेरिका ने हमला कर वहां के राष्ट्रपति का अपहरण कर लिया था। निःसंदेह वेनेजुएला में तेल के सबसे अधिक भंडार हैं, पर उनसे तेल का दोहन कठिन है। इस तेल का शोधन भी आसान नहीं। अब इसमें संदेह नहीं कि अमेरिका ने जैसे वेनेजुएला पर बिना सोचे-समझे मनमाने तरीके से हमला किया, वैसे ही ईरान पर।

तेल संकट दूर करने के लिए इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी ने अपने इमरजेंसी स्टाक से 40 करोड़ बैरल तेल बाजार में जारी किया है, लेकिन इसके बाद भी तेल के दाम सौ डालर पार कर गए हैं। चूंकि ईरान जवाबी हमले करने में अभी भी समर्थ बना हुआ है, इसलिए कहना कठिन है कि युद्ध कब खत्म होगा। यदि यह युद्ध लंबा खिंचता है और उसके चलते खाड़ी के देशों से तेल एवं गैस की आपूर्ति बाधित बनी रहती है तो विश्व में ऊर्जा संकट और गहराएगा। इस ऊर्जा संकट के लिए सबसे बड़ा दोषी अमेरिका ही होगा।

वह इस युद्ध को जल्द खत्म करने में सक्षम नहीं दिख रहा है। उसके अरबों डालर खर्च हो चुके हैं, पर युद्ध जल्द समाप्त होने के कोई संकेत नहीं। अमेरिका ने सोचा था कि अली खामेनेई को मार देने से ईरान में सत्ता परिवर्तन हो जाएगा, लेकिन फिलहाल ऐसा कुछ होता नहीं दिखता। मुश्किल यह भी है कि ईरान के नए सुप्रीम लीडर मोजतबा खामेनेई युद्ध खत्म करने के लिए ऐसी शर्तें रख रहे हैं, जिन्हें न तो अमेरिका स्वीकार कर सकता है और न ही खाड़ी के देश।

संपादकीय

सत्ता के गलियारों की पुकार: जब अचानक दिल्ली बुलाने लगती है

भारतीय राजनीति की दुनिया कई बार इतनी रोचक और अप्रत्याशित होती है कि यहां होने वाली घटनाएं किसी व्यंग्य कथा से कम नहीं लगतीं। नेताओं के फैसले कभी लंबी रणनीति का परिणाम होते हैं, तो कभी ऐसे भी प्रतीत होते हैं जैसे किसी सुबह अचानक कोई विचार मन में कौंध गया हो और उसी के अनुसार पूरी दिशा बदल गई हो। ऐसा ही एक प्रसंग तब सामने आता है जब किसी अनुभवी नेता को अचानक यह अहसास हो जाए कि अब उन्हें दिल्ली जाना चाहिए और राज्यसभा की कुर्सी पर बैठना चाहिए। कहानी कुछ इस तरह शुरू होती है कि एक दिन सुबह आंख खुलते ही उनके मन में एक अजीब-सी हलचल पैदा हुई। यह कोई साधारण विचार नहीं था, बल्कि ऐसा लगा मानो किसी भीतर की आवाज ने उन्हें पुकारा हो कि अब समय आ गया है दिल्ली जाने का। यह वह इलहाम नहीं था जो किसी संत या महापुरुष को संसार छोड़कर सत्य की खोज में निकलने के लिए प्रेरित करता है। यह वैसा भी नहीं था जैसा दुनिया की राजनीति में कई बार बड़े नेताओं को अचानक कोई साहसिक निर्णय लेने का विचार आ जाता है। यह एक अलग ही तरह का इलहाम था—सीधा और बिल्कुल राजनीतिक। उन्हें लगा कि अब जाकर राज्यसभा में बैठना चाहिए। राजनीति में अनुभव का अपना महत्व होता है। एक नेता अपने जीवन में कई पड़ाव पार करता है। कोई पहले विधानसभा में पहुंचता है, फिर संसद की लोकसभा में अपनी जगह बनाता है और कुछ लोग विधान परिषद के रास्ते भी राजनीति में सक्रिय रहते हैं। लेकिन राज्यसभा की अपनी अलग पहचान है। वहां पहुंचना कई बार वरिष्ठता और राजनीतिक परिपक्वता का प्रतीक माना जाता है। इसलिए जब किसी नेता को यह याद आता है कि वह लोकसभा में बैठ चुका है, विधानसभा का अनुभव भी ले चुका है और विधान परिषद की कुर्सी भी देख चुका है, तो स्वाभाविक ही मन में यह विचार आ सकता है कि अब राज्यसभा का अनुभव भी लेना चाहिए। दिल्ली का आकर्षण भी अपने आप में एक अलग कहानी है। भारत के कोने-कोने में रहने वाले लोगों के लिए दिल्ली केवल एक शहर नहीं, बल्कि सत्ता और निर्णयों का केंद्र है। यहां पहुंचना कई लोगों के लिए एक सपना होता है। हजारों लोग अपने जीवन में कभी न कभी यह सोचते हैं कि काश उन्हें भी दिल्ली में काम करने या वहां की राजनीति का हिस्सा बनने का अवसर मिले। लेकिन हर सपना पूरा नहीं हो पाता। कई लोगों के लिए दिल्ली उतनी ही दूर रहती है जितनी कहावतों में कही जाती है—"दिल्ली अभी बहुत दूर है।" फिर भी राजनीति में कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके लिए दिल्ली की दूरी उतनी मुश्किल नहीं होती। वे पहले भी दिल्ली में रह चुके होते हैं, वहां के राजनीतिक माहौल से परिचित होते हैं और सत्ता के गलियारों की भाषा समझते हैं। ऐसे लोग जब कभी अपने राज्य की राजनीति में व्यस्त हो जाते हैं, तो भी उनके मन में कहीं न कहीं दिल्ली की याद बनी रहती है। फिर अचानक किसी दिन उन्हें लगता है कि अब फिर से दिल्ली का रास्ता पकड़ना चाहिए। राजनीति में इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं का भी अपना अलग संसार होता है। कोई नेता मुख्यमंत्री बनने का सपना देखता है, कोई प्रधानमंत्री बनने की इच्छा रखता है और कोई संसद के दोनों सदनों में बैठने का अनुभव हासिल करना चाहता है। यह इच्छाएं कभी पूरी होती हैं और कभी अधूरी रह जाती हैं। लेकिन राजनीति की खासियत यही है कि यहां अवसर कभी भी आ सकता है और जब अवसर आता है तो कई बार निर्णय भी बहुत तेजी से लिए जाते हैं। ऐसी घटनाओं पर राजनीतिक विश्लेषक और आलोचक अपनी-अपनी व्याख्याएं करने लगते हैं। कोई इसे दूरदर्शिता कहता है, तो कोई इसे अवसरवाद मानता है। भारतीय राजनीति में तो "पलटी मारना" भी एक लोकप्रिय मुहावरा बन चुका है। जब कोई नेता बार-बार अपना रुख बदलता है तो लोग मजाक में उसे "पलटूराम" भी कह देते हैं। लेकिन यह भी सच है कि राजनीति की परिस्थितियां अक्सर इतनी जटिल होती हैं कि नेताओं को समय-समय पर अपने फैसले बदलने पड़ते हैं। दिल्ली की राजनीति में प्रवेश करने का रास्ता भी हमेशा सीधा नहीं होता। खासकर राज्यसभा के मामले में तो यह और भी दिलचस्प हो जाता है। राज्यसभा में सदस्य सीधे जनता द्वारा नहीं चुने जाते, बल्कि राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित प्रतिनिधि उन्हें चुनते हैं। इसलिए वहां पहुंचने के लिए केवल व्यक्तिगत इच्छा ही काफी नहीं होती, बल्कि राजनीतिक समीकरणों का साथ होना भी जरूरी होता है। जब किसी नेता को यह महसूस हो जाए कि अब उनके लिए राज्यसभा का रास्ता खुल सकता है, तो यह उनके राजनीतिक जीवन का नया अध्याय बन जाता है।

प्रेरणा

पहाड़ों की कहानियों में छिपा रहस्य: भय, लोककथा और आधुनिक चेतना का संगम

पर्वतीय अंचल सदियों से मानव कल्पना, रहस्य और प्रकृति की अनकही कहानियों के केंद्र रहे हैं। ऊंचे पहाड़ों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और दूर-दूर तक फैली खामोशी के बीच रहने वाला जीवन अपने भीतर एक अलग ही संसार समेटे रहता है। यहां प्रकृति जितनी सुंदर और आकर्षक दिखाई देती है, उतनी ही रहस्यमयी भी लगती है। यही कारण है कि पहाड़ों से जुड़ी लोककथाओं और किंवदंतियों में भूत-प्रेत, अदृश्य शक्तियों और अलौकिक घटनाओं का उल्लेख बार-बार मिलता है। यह केवल डर पैदा करने वाली कहानियां नहीं होतीं, बल्कि वे उस समाज की सामूहिक चेतना, अनुभवों और कल्पनाओं का प्रतिबिंब भी होती हैं।

मानव इतिहास में जब भी किसी घटना की स्पष्ट व्याख्या संभव नहीं होती थी, तब उसे समझाने के लिए कल्पनाओं का सहारा लिया जाता था। पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के सामने प्रकृति के कई ऐसे रूप आते रहे हैं जिन्हें समझना आसान नहीं था। अचानक आने वाली बीमारियां, घने जंगलों में घटने वाली रहस्यमयी घटनाएं या रात के सन्नाटे में सुनाई देने वाली अनजानी आवाजें—इन सबने लोककथाओं को जन्म दिया। धीरे-धीरे ये कथाएं पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाती रहीं और समाज की सांस्कृतिक स्मृति का हिस्सा बन गईं।

कई विद्वानों का मानना है कि भूत-प्रेत से जुड़ी कहानियां केवल अज्ञान का परिणाम नहीं थीं, बल्कि समाज में अनुशासन और मर्यादा बनाए रखने के लिए भी उनका उपयोग किया जाता था। बच्चों को रात में अकेले बाहर न जाने की सलाह देने के लिए या किसी खतरनाक स्थान से दूर रहने के लिए कई बार भूतों की कहानियां सुनाई जाती थीं। इस प्रकार ये कथाएं सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने का एक साधन भी बन जाती थीं। हालांकि आधुनिक विज्ञान और तर्कशील सोच इन मान्यताओं को चुनौती देती है, लेकिन फिर भी पहाड़ों में रहने वाले लोगों के अवचेतन में इन कथाओं की स्मृति आज भी जीवित है।

यही रहस्य और लोकजीवन की गहराई आधुनिक साहित्यकारों को भी आकर्षित करती रही है। पहाड़ों की कहानियां केवल डर या रोमांच तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे मानव मनोविज्ञान, समाज की मानसिकता और प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंधों को भी उजागर करती हैं। इसी संदर्भ में लेखक आदित्य कांत का नाम उल्लेखनीय है, जिन्होंने पहाड़ों के जीवन और वहां के अनुभवों को रोचक और समकालीन शैली में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

आदित्य कांत की पहली पुस्तक "हाई ऑन कसोल" ने पाठकों के बीच काफी लोकप्रियता हासिल की थी। इस पुस्तक में उन्होंने हिमालयी क्षेत्र की जीवनशैली, वहां के युवाओं की सोच और पर्यटन से जुड़े अनुभवों को दिलचस्प ढंग से प्रस्तुत किया था। उनकी नई पुस्तक "घोस्ट्स, हॉरर एंड हिल्स" इसी कड़ी को आगे बढ़ाती है, लेकिन इस बार वे पहाड़ों के रहस्यमयी पक्ष को केंद्र में रखते हैं। पुस्तक का शीर्षक ही इतना आकर्षक है कि पाठक तुरंत उसकी ओर खिंच जाता है और उसके भीतर छिपी कहानियों को जानने की उत्सुकता बढ़ जाती है।

आदित्य कांत अंग्रेजी में लिखते हैं, लेकिन उनकी लेखन शैली में ऐसी सहजता और रोचकता है जो पाठक को शुरुआत से अंत तक बांधे रखती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में लगभग तीन दशकों तक काम करने का अनुभव उन्हें पाठकों की रुचियों और मनोविज्ञान को समझने में मदद करता है। यही कारण है कि उनकी कहानियां केवल साहित्यिक प्रयोग नहीं हैं, बल्कि उनमें बाजार की समझ और पाठक की अपेक्षाओं का भी ध्यान रखा गया है। वे जानते हैं कि आज की पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए कहानी में रोचकता, गति और भावनात्मक गहराई का संतुलन आवश्यक है।

इस पुस्तक में शामिल अठारह कहानियां अलग-अलग परिस्थितियों और अनुभवों को सामने लाती हैं। इन कहानियों में कहीं अदृश्य भय का वातावरण है, तो कहीं रहस्य के बीच छिपी मानवीय संवेदनाएं दिखाई देती हैं। लेखक इन कथाओं के माध्यम से केवल डर पैदा करने की कोशिश नहीं करते, बल्कि वे पाठकों को सोचने के लिए भी प्रेरित करते हैं। उनकी कहानियों में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वे अंधविश्वास या रूढ़िवादिता को बढ़ावा नहीं देना चाहते, बल्कि वे इन कथाओं को एक रचनात्मक माध्यम के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

उनकी रचनाओं की खासियत यह है कि वे लोककथाओं और आधुनिक जीवन के अनुभवों को एक साथ जोड़ते हैं। पहाड़ों में सदियों से सुनाई जाने वाली कहानियां उनके कथानक का आधार बनती हैं, लेकिन वे उन्हें नए संदर्भों के साथ प्रस्तुत करते हैं। इस तरह उनकी कहानियां अतीत और वर्तमान के बीच एक पुल का काम करती हैं। पाठक जब इन कहानियों को पढ़ता है तो उसे केवल रहस्य और रोमांच ही नहीं मिलता, बल्कि वह पहाड़ी जीवन की जटिलताओं और वहां के सामाजिक यथार्थ को भी समझने लगता है।

आज के समय में जब डिजिटल माध्यमों के कारण पढ़ने की आदत कम होती जा रही है, ऐसे में रोचक कहानियों के माध्यम से नई पीढ़ी को साहित्य से जोड़ना एक बड़ी चुनौती बन गया है। आदित्य कांत इस चुनौती को स्वीकार करते दिखाई देते हैं। वे अपनी कहानियों को इस तरह रचते हैं कि वे युवा पाठकों को आकर्षित करें और उन्हें किताबों की दुनिया से जोड़ें। उनके लिए कहानी केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिए पाठक अपने आसपास की दुनिया को नए दृष्टिकोण से देख सकता है।

पहाड़ों का जीवन जितना सुंदर दिखता है, उतना ही कठिन भी होता है। जो लोग कुछ दिनों के लिए वहां घूमने जाते हैं, उनके लिए यह दुनिया किसी स्वप्न की तरह लगती है। लेकिन वहां रहने वाले लोगों के लिए यह जीवन कई चुनौतियों और अनिश्चितताओं से भरा होता है। दुर्गम रास्ते, सीमित संसाधन और प्रकृति की अनिश्चितता उनके दैनिक जीवन का हिस्सा होते हैं। ऐसे वातावरण में कई बार ऐसी घटनाएं भी घटित हो जाती हैं जिन्हें तुरंत समझ पाना आसान नहीं होता। यही घटनाएं धीरे-धीरे लोककथाओं और रहस्यमयी कहानियों का रूप ले लेती हैं।

कभी-कभी अज्ञानता के कारण भी ऐसी कथाएं जन्म लेती हैं, तो कई बार कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए भी भूत-प्रेत जैसी कहानियां गढ़ लेते हैं। लेकिन साहित्य का काम केवल इन कथाओं को दोहराना नहीं होता, बल्कि उन्हें नए दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करना होता है। आदित्य कांत अपनी कहानियों में यही प्रयास करते हैं। वे रहस्य और भय के वातावरण को बनाए रखते हुए भी पाठक को एक प्रगतिशील सोच की ओर ले जाते हैं। उनकी कहानियां यह भी दिखाती हैं कि भय केवल बाहरी परिस्थितियों से नहीं पैदा होता, बल्कि कई बार वह मानव मन की कल्पनाओं और असुरक्षाओं से भी जन्म लेता है।

मुनाफाखोरी की बीमारी, दुस्साहस में नहीं आई कोई कमी

जब भी दुनिया में कोई बड़ा भू-राजनीतिक तनाव पैदा होता है और उसका असर ऊर्जा आपूर्ति या आवश्यक वस्तुओं पर पड़ने लगता है, तब उसके दूरगामी प्रभाव केवल अंतरराष्ट्रीय राजनीति तक सीमित नहीं रहते। उसका असर सीधे आम नागरिकों के जीवन पर दिखाई देने लगता है। हाल के समय में अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के कारण ऊर्जा आपूर्ति को लेकर जो आशंकाएं पैदा हुईं, उनका प्रभाव भारत जैसे देशों में भी देखने को मिला। जैसे ही यह खबरें सामने आने लगीं कि ऊर्जा आपूर्ति पर संकट के बादल मंडरा सकते हैं, देश के कई हिस्सों में रसोई गैस सिलिंडरों की जमाखोरी और कालाबाजारी की खबरें भी आने लगीं। यह स्थिति किसी भी संवेदनशील समाज के लिए चिंता का विषय है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण किंतु सच है कि हमारे समाज में संकट की घड़ी कई बार कुछ लोगों के लिए अवसर बन जाती है। जैसे ही किसी वस्तु की आपूर्ति पर संकट की आशंका पैदा होती है, वैसे ही कुछ लोग उसका लाभ उठाने की कोशिश करने लगते हैं। रसोई गैस जैसी आवश्यक वस्तु, जो हर घर की जरूरत है, उसकी जमाखोरी और कालाबाजारी करना केवल कानून का उल्लंघन ही नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के खिलाफ भी है। इसके बावजूद कई शहरों में छापेमारी के दौरान यह पाया गया कि कुछ लोगों ने दर्जनों सिलिंडर चोरी-छिपे जमा कर रखे थे और उन्हें ऊंचे दामों पर बेचने की तैयारी कर रहे थे।

सरकार ने इस स्थिति को देखते हुए आवश्यक वस्तु अधिनियम लागू कर दिया, ताकि जमाखोरी और कालाबाजारी को रोका जा सके। यह कानून इसलिए बनाया गया था कि किसी भी संकट के समय आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके और कोई भी व्यक्ति या समूह कृत्रिम कमी पैदा करके मुनाफा न कमा सके। लेकिन व्यवहार में कई बार यह देखने को मिलता है कि कानून होने के बावजूद मुनाफाखोरों का दुस्साहस कम नहीं होता। वे जानते हैं कि पकड़े जाने की स्थिति में भी अक्सर सख्त सजा नहीं मिलती और किसी न किसी तरह वे बच निकलते हैं।

छापेमारी के दौरान कई शहरों में ऐसे लोग पकड़े गए जिन्होंने बड़ी संख्या में गैस सिलिंडर जमा कर रखे थे। इनमें कुछ प्रभावशाली लोग और राजनीतिक संबंध रखने वाले लोग भी शामिल बताए गए। इससे यह स्पष्ट होता है कि जमाखोरी का यह धंधा केवल छोटे स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें कई बार प्रभावशाली नेटवर्क भी शामिल हो जाते हैं। यही कारण है कि कई बार प्रशासन की कार्रवाई के बावजूद यह समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाती।

इस पूरे मामले का एक और चिंताजनक पहलू यह है कि कई बार संबंधित अधिकारियों और पुलिस की मिलीभगत भी सामने आती है। जब कानून लागू करने वाले ही अपने कर्तव्य से समझौता करने लगते हैं, तब स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। कुछ अधिकारी भी इस अवैध कमाई में हिस्सा लेने लगते हैं और इस तरह जमाखोरों और कालाबाजारियों को संरक्षण मिल जाता है। परिणाम यह होता है कि आम जनता को आवश्यक वस्तुएं महंगे दामों पर खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

भारत में यह समस्या नई नहीं है। जब भी किसी वस्तु की कमी की आशंका होती है, जमाखोरी और कालाबाजारी की घटनाएं सामने आने लगती हैं। कभी प्याज की कीमतें अचानक बढ़ जाती हैं और बाद में पता चलता है कि कुछ व्यापारियों ने बड़े पैमाने पर प्याज जमा कर लिया था। कभी उर्वरकों की कमी की खबरें आती हैं और किसान परेशान हो जाते हैं। इसी तरह कई बार अन्य आवश्यक वस्तुओं के मामले में भी यही स्थिति देखने को मिलती है।

हाल के वर्षों में कोविड महामारी के दौरान भी ऐसी ही स्थिति देखने को मिली थी। जब पूरा देश एक अभूतपूर्व संकट से जूझ रहा था और लोग अपने प्रियजनों की जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, तब भी कुछ लोगों ने उस संकट को कमाई का जरिया बना लिया। ऑक्सीजन सिलिंडर, जीवनरक्षक दवाएं और अन्य आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की कालाबाजारी की घटनाएं सामने आई थीं। उस समय समाज ने देखा कि किस तरह कुछ लोग मानवता से ऊपर अपने निजी लाभ को रख देते हैं।

यह प्रवृत्ति केवल आर्थिक अपराध नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और नैतिक पतन का भी संकेत देती है। जब कोई व्यक्ति जानबूझकर आवश्यक वस्तुओं को छिपाकर रखता है और बाद में उन्हें महंगे दामों पर बेचता है, तो वह केवल कानून नहीं तोड़ रहा होता, बल्कि समाज के कमजोर वर्गों के साथ अन्याय भी कर रहा होता है। गरीब और मध्यम वर्ग के लोग पहले ही महंगाई से जूझ रहे होते हैं और ऐसे में जमाखोरी उनकी मुश्किलों को और बढ़ा देती है।

ऐसा लगता है कि कुछ लोग हमेशा इस मौके की तलाश में रहते हैं कि कब किसी वस्तु की आपूर्ति में थोड़ी कमी दिखाई दे और वे तुरंत जमाखोरी शुरू कर दें। यह मानसिकता अत्यंत खतरनाक है, क्योंकि यह संकट को और गहरा बना देती है। अगर बाजार में वस्तु की वास्तविक कमी भी हो, तो जमाखोरी उसे कई गुना बढ़ा देती है और आम लोगों के लिए स्थिति और कठिन हो जाती है।

अभियान

भक्ति के सूक्ष्म संकेत: जब ईश्वर अपनी स्वीकृति का आभास कराते हैं

मानव जीवन में पूजा और प्रार्थना केवल धार्मिक अनुष्ठान भर नहीं होते, बल्कि यह आत्मा और परमात्मा के बीच संवाद का एक गहरा माध्यम भी होते हैं। जब कोई व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ ईश्वर का स्मरण करता है, तो वह केवल मंत्रों का उच्चारण नहीं करता, बल्कि अपने मन की गहराइयों से निकलने वाली भावनाओं को परम शक्ति के सामने समर्पित करता है। यही कारण है कि भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में भक्ति को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भक्त मानते हैं कि सच्ची श्रद्धा और निष्कपट भाव से की गई प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती। ईश्वर भले ही प्रत्यक्ष रूप से सामने न आएं, लेकिन वे कई सूक्ष्म संकेतों के माध्यम से यह आभास अवश्य करा देते हैं कि उन्होंने अपने भक्त की पुकार सुन ली है।

भारतीय संस्कृति में ऐसे अनेक अनुभवों और मान्यताओं का उल्लेख मिलता है, जिनके आधार पर यह समझा जाता है कि पूजा स्वीकार हुई है और ईश्वर की कृपा प्राप्त हो रही है। यह संकेत बहुत सूक्ष्म होते हैं और इन्हें केवल वही व्यक्ति अनुभव कर सकता है जिसका मन भक्ति और विश्वास से भरा हो। जब कोई व्यक्ति पूरे मन से पूजा करता है और उसके भीतर सच्ची आस्था होती है, तब उसे ऐसे कई अनुभव हो सकते हैं जो उसे यह एहसास कराते हैं कि उसकी प्रार्थना ईश्वर तक पहुंच गई है।

इन संकेतों में सबसे पहला और महत्वपूर्ण संकेत मन की गहरी शांति है। अक्सर देखा जाता है कि जब कोई व्यक्ति सच्चे मन से पूजा करता है, तो उसके भीतर एक अद्भुत हल्कापन और संतोष का अनुभव होने लगता है। पूजा समाप्त होने के बाद मन में जो शांति उत्पन्न होती है, वह साधारण नहीं होती। यह ऐसा लगता है मानो मन के सारे बोझ अचानक हल्के हो गए हों और हृदय में एक नई ऊर्जा का संचार हो गया हो। यह अनुभव इस बात का संकेत माना जाता है कि ईश्वर ने भक्त की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया है और उसे मानसिक शांति का आशीर्वाद दिया है।

इसी प्रकार पूजा के दौरान जलाया गया दीपक भी कई बार विशेष संकेत देता है। हिंदू धर्म में दीपक को केवल प्रकाश का स्रोत नहीं माना जाता, बल्कि इसे दिव्यता और ईश्वर की उपस्थिति का प्रतीक भी समझा जाता है। जब पूजा के समय दीपक की लौ बिना हवा के भी शांत और स्थिर बनी रहती है, तो इसे अत्यंत शुभ माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह संकेत बताता है कि वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो रहा है और देवताओं की कृपा उस स्थान पर बनी हुई है। स्थिर लौ यह दर्शाती है कि पूजा का वातावरण पवित्र और दिव्य हो चुका है।

कई लोगों ने यह भी अनुभव किया है कि पूजा के दौरान या उसके बाद अचानक घर में एक दिव्य सुगंध महसूस होने लगती है। यह सुगंध कभी फूलों जैसी होती है, तो कभी चंदन या धूप की तरह। आश्चर्य की बात यह होती है कि कई बार यह सुगंध तब भी महसूस होती है जब घर में कोई अगरबत्ती या इत्र नहीं जलाया गया होता। आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुसार इसे भी एक दिव्य संकेत माना जाता है। यह माना जाता है कि ऐसी सुगंध देवताओं की उपस्थिति का आभास कराती है और यह दर्शाती है कि ईश्वर की कृपा उस स्थान पर बनी हुई है।

भक्ति के मार्ग पर चलने वाले कई साधक यह भी बताते हैं कि कभी-कभी पूजा करते समय उनकी आंखों से स्वतः ही आंसू बहने लगते हैं। यह आंसू दुख के नहीं होते, बल्कि भावनाओं के उमड़ने का परिणाम होते हैं। जब मन अत्यधिक श्रद्धा और प्रेम से भर जाता है, तब हृदय की भावनाएं आंखों के माध्यम से बाहर आने लगती हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से इसे भी एक दिव्य अनुभव माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि जब किसी की आंखों से भक्ति के आंसू बहते हैं, तो वह इस बात का संकेत होता है कि ईश्वर की कृपा दृष्टि उस व्यक्ति पर बनी हुई है और उसकी प्रार्थना स्वीकार हो रही है।

एक और रोचक संकेत कई बार पूजा के दौरान देखने को मिलता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि पूजा में चढ़ाए गए फूल या माला अचानक मूर्ति या तस्वीर से गिरकर भक्त के सामने आ जाते हैं। कई लोग इसे संयोग मान सकते हैं, लेकिन भक्ति की दृष्टि से इसे ईश्वर का आशीर्वाद समझा जाता है। यह माना जाता है कि जब ऐसा होता है तो यह इस बात का संकेत है कि देवता भक्त की भक्ति से प्रसन्न हैं और उसे अपना आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में ऐसे संकेतों का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों और संतों की वाणी में भी मिलता है। संतों ने कहा है कि ईश्वर से संवाद केवल शब्दों के माध्यम से नहीं होता, बल्कि भावनाओं और अनुभवों के माध्यम से भी होता है। जब भक्त का मन पूरी तरह से समर्पण में डूब जाता है, तब उसे ऐसे अनुभव होने लगते हैं जो सामान्य परिस्थितियों में संभव नहीं लगते।

कई बार पूजा के बाद जीवन में अचानक कुछ सकारात्मक घटनाएं भी होने लगती हैं। उदाहरण के लिए, पूजा समाप्त होने के तुरंत बाद कोई शुभ समाचार मिल जाना या कोई अतिथि अचानक घर आ जाना भी कई लोग शुभ संकेत के रूप में देखते हैं। भारतीय परंपरा में अतिथि को देवता के समान माना गया है। इसलिए यदि पूजा के बाद कोई अतिथि घर आए या कोई अच्छी खबर मिले, तो इसे भी ईश्वर की कृपा का प्रतीक माना जाता है।

हालांकि यह भी समझना आवश्यक है कि ऐसे संकेतों का अनुभव हर व्यक्ति को एक ही प्रकार से नहीं होता। भक्ति का मार्ग बहुत व्यक्तिगत होता है और हर व्यक्ति का अनुभव अलग-अलग हो सकता है। किसी को मन की शांति के रूप में संकेत मिलता है, तो किसी को किसी और प्रकार के अनुभव के रूप में। इसलिए इन संकेतों को किसी कठोर नियम की तरह नहीं देखना चाहिए, बल्कि इन्हें आध्यात्मिक अनुभूति के रूप में समझना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पूजा का उद्देश्य केवल संकेत प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। सच्ची भक्ति वह है जिसमें व्यक्ति बिना किसी अपेक्षा के ईश्वर की आराधना करता है। जब भक्ति केवल मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए की जाती है, तब वह सीमित हो जाती है। लेकिन जब भक्ति प्रेम और समर्पण के भाव से की जाती है, तब वह आत्मा को ऊंचाई की ओर ले जाती है।

ईश्वर के साथ संबंध किसी सौदे की तरह नहीं होता, बल्कि यह एक गहरा आध्यात्मिक रिश्ता होता है। भक्त का काम केवल श्रद्धा और विश्वास के साथ प्रार्थना करना है। फल देना या न देना ईश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है। फिर भी जब कभी जीवन में ऐसे संकेत दिखाई देते हैं, तो वे व्यक्ति के विश्वास को और मजबूत कर देते हैं और उसे यह महसूस कराते हैं कि वह अकेला नहीं है।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो ऐसे अनुभव व्यक्ति के भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। जब किसी को यह महसूस होता है कि उसकी प्रार्थना सुनी जा रही है, तो उसके मन में आशा और विश्वास बढ़ जाता है। यही विश्वास उसे जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति देता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि पूजा केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि आत्मा की यात्रा है। इस यात्रा में कई बार ऐसे क्षण आते हैं जब भक्त को ईश्वर की उपस्थिति का आभास होता है। यह आभास कभी मन की शांति के रूप में मिलता है, कभी किसी दिव्य सुगंध के रूप में, तो कभी भावनाओं के आंसुओं के रूप में। यह सभी अनुभव उस अदृश्य शक्ति की याद दिलाते हैं जो सदा हमारे साथ है।

जब कोई व्यक्ति सच्चे मन से ईश्वर को पुकारता है, तो उसकी आवाज अनसुनी नहीं जाती। हो सकता है कि उसका उत्तर तुरंत न मिले, लेकिन किसी न किसी रूप में ईश्वर उसकी भक्ति का उत्तर अवश्य देते हैं। यही विश्वास भक्ति को जीवित रखता है और यही विश्वास मनुष्य को आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस: गुजरात ने वर्ष 2025-26 में 11.30 लाख+ शिशुओं और 24 लाख+ बच्चों का सफल टीकाकरण कर बनाया रिकॉर्ड

- पोलियो मुक्त गुजरात की उपलब्धि को बनाए रखने के लिए वर्ष 2025 में 24.65 लाख बच्चों को दी पोलियो की खुराक
- "टीका एक्सप्रेस", "मोबाइल ममता दिवस" और "खिल-खिलाट वाहन" जैसे माध्यमों से दूरदराज के क्षेत्रों तक संभव रहा टीककारण
- खसरा-रूबेला उन्मूलन के लिए IDSP और VSIMS प्रणालियों के जरिए प्राप्त रियल-टाइम डेटा का उपयोग
- राष्ट्रव्यापी HPV टीकाकरण अभियान की 28 फरवरी से गुजरात में शुरुआत

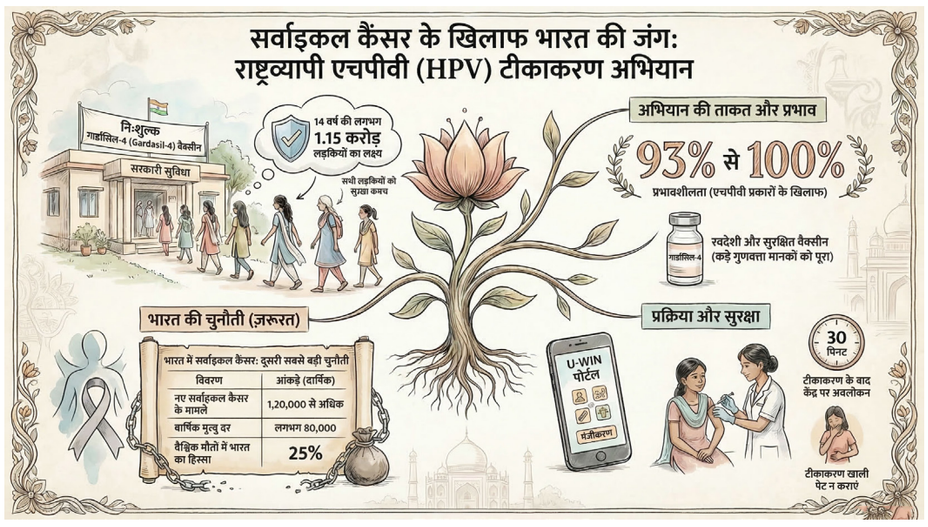

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाने के विजन को साकार करते हुए, मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात सरकार इस क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य कर रही है। राज्य में 'सार्वत्रिक टीकाकरण कार्यक्रम' के सुदृढ़ीकरण से माताओं और बच्चों को सुरक्षा का एक व्यापक कवच प्रदान किया जा रहा है। गुजरात सरकार की इन निरंतर और प्रभावी पहलों के परिणामस्वरूप, वर्ष 2025-26 के दौरान 11.30 लाख+ शिशुओं और 24 लाख+ बच्चों का सफल टीकाकरण सम्पन्न हुआ है।

स्वस्थ बचपन, सुरक्षित भविष्य: गुजरात के राज्यव्यापी अभियान के उत्साहजनक परिणाम

गुजरात के सार्वत्रिक टीकाकरण अभियान के तहत अप्रैल से फरवरी (2025-26) के दौरान राज्य में एक वर्ष तक की आयु के 11 लाख 30 हजार से अधिक शिशुओं को पूर्ण टीकाकरण कवरेज प्रदान किया गया। इस अवधि में बीसीजी टीका 11 लाख 94 हजार से अधिक बच्चों को, पेंटावैलेंट (डीपीटी-हेपेटाइटिस-बी-हिब) टीका 11 लाख 59 हजार बच्चों को तथा खसरा-रूबेला टीका 11 लाख 24 हजार बच्चों को लगाया गया।

इसी तरह, शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग के समन्वय से स्कूल एवं बालवाटिका आधारित टीकाकरण अभियान भी चलाया गया। इसके तहत 10 और 16 वर्ष के विद्यार्थियों को स्कूलों में टीके लगाए गए, जबकि वर्ष 2025 में 5 वर्ष के बच्चों को बालवाटिकाओं में डीपीटी का दूसरा डोज़ दिया गया। इन दोनों श्रेणियों को मिलाकर पिछले एक वर्ष में 24 लाख से अधिक बच्चों का सफलतापूर्वक टीकाकरण किया गया।

साथ ही, वर्ष 2007 से गुजरात के पोलियो-मुक्त राज्य के स्टेटस को बनाए रखने के लिए वर्ष 2025 में भी राज्य सरकार द्वारा 14 जिलों में विशेष अभियान चलाकर 0 से 5 वर्ष आयु वर्ग के 24.65 लाख बच्चों को पोलियो की खुराक दी गई। आपको बता दें कि टीकाकरण के इन विभिन्न पहलों को गुजरात सरकार "टीका एक्सप्रेस", "मोबाइल ममता दिवस" और "खिल-खिलाट वाहन" के माध्यम से लागू करती है जिनके जरिए दूरदराज क्षेत्रों तक भी टीकाकरण सेवाएँ पहुँचाई जा रही हैं।

"स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार" पखवाड़ा: 3.50 लाख+ बच्चों और 1.24 लाख+ महिलाओं का सफल टीकाकरण

इसी तरह, स्वस्थ महिला-सशक्त समाज के मंत्र को सार्थक बनाए रखने के लिए राज्य सरकार ने 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 के बीच आयोजित "स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार" पखवाड़े के दौरान मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर केंद्रित विशेष टीकाकरण अभियान चलाया जिसमें 3 लाख 58 हजार से अधिक बच्चों और 1 लाख 24 हजार से अधिक गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण किया गया। इस अभियान के तहत गर्भवती महिलाओं को एंटीनैटल जांच के दौरान टेटनस-डिप्थीरिया का टीका दिया गया, जबकि बच्चों को बीसीजी, पेंटावैलेंट, खसरा-रूबेला, न्यूमोकोकल, इंजेक्टेबल पोलियो, ओरल पोलियो और रोटा वायरस के टीके लगाए गए।

राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस 2026: गुजरात सरकार द्वारा खसरा-रूबेला उन्मूलन के लिए विशेष अभियान

राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस (16 मार्च 2026) के अवसर पर गुजरात में खसरा-रूबेला उन्मूलन के लिए एक दिवसीय सघन अभियान शुरू करने जा रही है। राज्य सरकार के स्वास्थ्य विभाग ने वैक्सीन प्रिवेंटेबल डिजीज़ सर्विलांस इन्फॉर्मेशन मैनेजमेंट सिस्टम (VSIMS) और मेडिकल इंटीग्रेटेड डिसीज़ सर्वेलेंस प्रोग्राम (IDSP) पोर्टल से प्राप्त वास्तविक समय के आंकड़ों के आधार पर उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान भी कर ली है। औद्योगिक क्षेत्रों और सीमा जिलों में रहने वाले अन्य राज्यों के बच्चों पर विशेष ध्यान देते हुए 9 माह से 10 वर्ष तक के बच्चों का पूर्ण टीकाकरण सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है।

28 फरवरी से राष्ट्रव्यापी HPV टीकाकरण अभियान का गुजरात में प्रभावी कार्यान्वयन

हाल ही में 28 फरवरी 2026 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए राष्ट्रव्यापी HPV (Human Papilloma Virus) टीकाकरण अभियान को भी गुजरात में तेज़ी और सुव्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ाया जा रहा है। बेटियों को किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या का सामना न करना पड़े इसके लिए राज्य सरकार टीकाकरण से पहले खाली पेट न होना और टीकाकरण के बाद 30 मिनट के अवलोकन सहित सभी सुरक्षा प्रोटोकॉल्स को सख्ती से पालन कर रही है।

यह अभियान 14 से 15 वर्ष आयु वर्ग की बालिकाओं को लक्षित करता है और निजी क्षेत्र में 3,000 से 5,000 रुपये तक कीमत वाले इस टीके को राज्य सरकार पात्र बालिकाओं को निःशुल्क उपलब्ध करा रही है। भारत सरकार की यह पहल किशोरियों को सर्वाइकल कैंसर से सुरक्षा देने की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

मियागाम - डभोई - प्रतापनगर डेमू सेवा के ट्रायल रन को माननीय सांसद श्री मनसुखभाई वसावा एवं अन्य जनप्रतिनिधियों ने दिखाई हरी झंडी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा आज,15 मार्च, 2026 को मियागाम - डभोई - प्रताप नगर डेमू सेवा का ट्रायल रन किया गया। इस डेमू ट्रेन के ट्रायल रन को मियागांव स्टेशन से माननीय सांसद मनसुख भाई वसावा एवं माननीय विधायक श्री अक्षय पटेल तथा वापसी में डभोई स्टेशन से माननीय विधायक शैलेश भाई मेहता ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। माननीय जनप्रतिनिधियों ने यात्रियों की इस बहुप्रतीक्षित मांग के पूरा होने पर रेलवे की सराहना की।

मियागम स्टेशन पर आयोजित समारोह में माननीय सांसद मनसुख भाई वसावा ने अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत रेलवे के सौंदर्यीकरण के लिए किये जा रहे कार्य की सराहना करते हुए सभी से स्वच्छता को अपनाने की अपील की।उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य में अपने योगदान के लिए सभी से सहयोग की अपील की। माननीय विधायक अक्षय पटेल ने अपने उद्बबोधन में रेलवे द्वारा किए जा रहे विकास कार्यों की सराहना की। माननीय विधायक शैलेशभाई मेहता ने डभोई में आयोजित समारोह में रेलवे के प्रयासों की सराहना करते हुए मुंबई जाने वाली ट्रेनों के डभोई में स्टापेज़ और बुकिंग की मांग की।

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने डभोई और मियागाम के बीच डेमू ट्रेन के ट्रायल रन के अवसर पर मीडिया को संबोधित करते हुए बताया कि

माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी के निर्देशानुसार एवं माननीय महाप्रबंधक के मार्गदर्शन में डभोई स्टेशन पर दो नये प्लेटफार्म का निर्माण किया जा रहा है इस पर एकता नगर और मुंबई के बीच चलने वाली ट्रेनों को स्टॉपेज दिया जाएगा।

श्री भडके ने डभोई - मियागाम सेक्शन के बारे में बताया कि भारतीय रेलवे के इतिहास में इस क्षेत्र का एक खास स्थान है। 32.306 किलोमीटर लंबी मियागांव डभाई लाइन बडोदरा मंडल का सबसे पुराना नैरोगेज गेज़ सेक्शन है, जिसे असल में 1862 में गायकवाड बडौदा स्टेट रेलवे के तहत काम करना शुरू किया था, बाद में यह पश्चिम रेलवे का हिस्सा बन गया और कई दशकों तक इस क्षेत्र की सेवा करता रहा। इस सेक्शन को तेज़ बदलने के लिए बंद कर दिया गया और ब्रॉड गेज में बदलने के बाद यात्री सेवा का ट्रायल किया जा रहा है।

श्री भडके ने आगे बताया कि इस क्षेत्र पर ट्रेन सेवा शुरू होने के बाद रोजाना आने जाने वाले यात्रियों छात्रों व्यापारियों और आसपास के इलाकों के निवासियों को तेज भरोसेमंद और किफायती परिवहन मिलने से बहुत फायदा होगा साथ ही क्षेत्रीय कनेक्टिविटी भी मजबूत होगी जो इस क्षेत्र के समग्र आर्थिक और सामाजिक विकास में योगदान दे देगी। अपनी नियमित सेवा में यह ट्रेन मियागाम करजन और प्रताप नगर के बीच वाया डभोई परिचालित होगी।

सूरत में बिखरे राजस्थानी लोकसंस्कृति के रंग, सुथार समाज की महिलाओं ने उल्लास से मनाया गणगौर उत्सव

(जीएनएस)। सूरत। हीरा और टेक्सटाइल नगरी सूरत में बसे राजस्थानी प्रवासी समाज ने एक बार फिर अपनी समृद्ध लोक परंपरा और सांस्कृतिक विरासत की खूबसूरत झलक पेश की। शनिवार को शहर में श्री राजस्थान विश्वकर्मा मंडल (सुथार समाज) सूरत के महिला मंडल की ओर से पारंपरिक उल्लास और आस्था के साथ गणगौर उत्सव मनाया गया। इस आयोजन में समाज की महिलाओं ने पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ भाग लेकर सूरत की धरती पर राजस्थान की लोक संस्कृति के जीवंत रंग बिखेर दिए।

राजस्थान का प्रसिद्ध लोक पर्व Gangaur सुहाग, समर्पण और नारी शक्ति का प्रतीक माना जाता है। यह पर्व मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा भगवान Shiva और माता Parvati की आराधना के रूप में मनाया जाता है, जिनको लोक परंपरा में ईशर और गौरा कहा जाता है। मान्यता है कि इस दिन की गई पूजा से विवाहित महिलाओं को अखंड सौभाग्य का आशीर्वाद मिलता है, जबकि अविवाहित कन्याएं अच्छे वर की कामना करती हैं। सूरत में आयोजित इस उत्सव में भी यही आस्था और परंपरा पूरी श्रद्धा के साथ देखने को मिली।

कार्यक्रम के दौरान सुथार समाज की महिलाएं पारंपरिक राजस्थानी वेशभूषा में सजी-धजी नजर आईं। रंग-बिरंगी लहरिया और बंधेज की साड़ियों, भारी आभूषणों और पारंपरिक श्रृंगार से सुसज्जित महिलाओं ने माहौल को पूरी तरह राजस्थानी रंग में रंग दिया। जैसे ही कार्यक्रम की शुरुआत हुई, ढोल-नगाड़ों और लोक गीतों की मधुर धुनों के बीच उत्सव का माहौल और भी उल्लासमय हो उठा।

इस आयोजन का मुख्य आकर्षण ईशर भगवान का बंदोरा रहा। बंदोरा के दौरान महिलाओं ने भगवान ईशर की प्रतीकात्मक झांकी के साथ पारंपरिक गीत गाते हुए नृत्य किया। ढोल-नगाड़ों की थाप पर महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था। कई महिलाओं ने राजस्थानी लोकनृत्य घूमर प्रस्तुत किया, जिसने पूरे माहौल को जीवंत और उत्सवमय बना दिया। गीत-संगीत और नृत्य के बीच उपस्थित सभी महिलाओं ने एक-दूसरे के साथ खुशी साझा की और पर्व की परंपरा को पूरे हर्षोल्लास के साथ निभाया।

पूरे आयोजन के दौरान भगवान शिव और माता पार्वती की विधिवत पूजा-अर्चना की गई। महिलाओं ने अपने परिवार की सुख-समृद्धि, शांति और अखंड सौभाग्य की कामना करते हुए प्रार्थना की। धार्मिक अनुष्ठानों के साथ-साथ लोकगीतों और पारंपरिक रस्मों ने इस आयोजन को एक सांस्कृतिक उत्सव का स्वरूप दे दिया।

समाज की महिलाओं ने बताया कि प्रवासी जीवन में इस प्रकार के सांस्कृतिक आयोजन उनकी परंपराओं और पहचान को जीवित रखने का माध्यम बनते हैं। सूरत जैसे महानगर में अलग-अलग राज्यों और संस्कृतियों के लोग रहते हैं, लेकिन ऐसे अवसरों पर अपने मूल प्रदेश की परंपराओं को याद करना और उन्हें आगे बढ़ाना एक विशेष अनुभव होता है।

इस भव्य आयोजन को सफल बनाने में महिला मंडल की सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम में हेमल, उर्मिला, मनीषा, सुंदर, नीतू, सपना, संगीता, रेखा, ईशु, सुनीता, जसोदा, मनीषा, भक्ति और सरोज सहित बड़ी संख्या में समाज की महिलाएं उपस्थित रहीं। सभी ने मिलकर उत्सव को सफल और यादगार बनाने में सक्रिय योगदान दिया।

अहमदाबाद मंडल के डीआरएम श्री वेद प्रकाश ने साबरमती स्टेशन के पुनर्विकास कार्यों का किया निरीक्षण

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (DRM) वेद प्रकाश ने अधिकारियों की टीम के साथ साबरमती रेलवे स्टेशन पर चल रहे री-डेवलपमेंट (पुनर्विकास) कार्यों का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्टेशन परिसर में जारी निर्माण कार्यों की प्रगति का जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को कार्यों को समयबद्ध और उच्च गुणवत्ता के साथ पूरा करने के निर्देश दिए। इस दौरान साबरमती स्टेशन के रि-डेवलपमेंट के कार्यों में गर्डर व ट्रेस लांचिंग के प्लानिंग के विषय पर चर्चा की गई। प्लानिंग में ट्रेन मूवमेंट व ब्लॉक के बारे में भी विचार विमर्श किया गया। इस दौरान निर्माण विभाग के चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर श्री डी.आर.चौधरी व अन्य अधिकारी मौजूद थे। साबरमती स्टेशन रि-डेवलपमेंट होने पर कॉन्कोर्स क्षेत्र में विशाल वेटिंग हॉल एवं फूड प्लाजा जैसी आधुनिक सुविधाए भी होगी, जिससे यात्रियों को बेहतर आराम एवं खानपान की सुविधा प्राप्त होगी। कॉन्कोर्स का क्षेत्रफल लगभग 110×36 वर्गमीटर होगा। वहीं हाई-रूफ का आकार 122×171 मीटर तथा 88×110 मीटर होगा, जिससे कुल लगभग 30,542 वर्गमीटर क्षेत्र ट्रैकों के ऊपर कवर होगा। यह छत प्लेटफॉर्म से लगभग 65 फीट की ऊंचाई पर स्थापित की जा रही है। स्टेशन पुनर्विकास योजना के अंतर्गत यात्रियों की सुगमता हेतु 20 लिफ्ट, 20 एस्केलेटर तथा 20 सीढ़ियों का प्रावधान किया जा रहा है। इन आधुनिक सुविधाओं से यात्रियों की आवाजाही सुगम होगी। डीआरएम ने यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए स्टेशन पर विकसित की जा रही आधुनिक यात्री सुविधाओं, स्टेशन भवन, प्लेटफॉर्म क्षेत्र और अन्य बुनियादी ढांचे का भी अवलोकन किया। साथ ही उन्होंने निर्माण एजेंसियों को सुरक्षा मानकों का पालन करते हुए कार्य तेज़ करने के निर्देश दिए, ताकि यात्रियों को जल्द ही बेहतर और आधुनिक सुविधाएं मिल सकें।

वंचितों को वरीयता

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आदिजातियों के सर्वांगीण विकास के संकल्प को साकार करने की दिशा में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का महत्वपूर्ण कदम

राज्य की पूर्वी पट्टी के दो आदिवासी जिलों को एक ही दिन में 1,100 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों की भेंट मिली

- पंचमहाल के चार आदिजाति तहसीलों के 79 गांवों के 130 तालाब पानम आधारित उद्वहन सिंचाई योजना की पाइपलाइन से भरे जाएंगे
- 206 किलोमीटर लंबी सिंचाई पाइपलाइन से 86 हजार एकड़ क्षेत्र को सिंचाई का लाभ मिलेगा
- एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट दाहोद को विकसित भारत के लिए विकसित गुजरात में नेतृत्व करने वाला इंस्पिरेशनल जिला बनाना है
- इस वर्ष के चार लाख करोड़ रुपए के ऐतिहासिक बजट में 485 करोड़ रुपए आदिजाति क्षेत्रों में लिफ्ट इरिगेशन के लिए आवंटित किए गए हैं
- तीन आदिजाति जिलों में नर्मदा आधारित लिफ्ट इरिगेशन से 18 तहसीलों के 51,480 हेक्टेयर क्षेत्र को सिंचाई लाभ देने का प्रावधान

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को राज्य की पूर्वी पट्टी के दो आदिवासी जिलें; पंचमहाल और दाहोद में एक ही दिन में 1100 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास सम्पन्न किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'वंचितों को वरीयता' के कार्यमंत्र के साथ आदिवासियों के सर्वांगीण विकास का विचार गुजरात में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में साकार हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने इस संदर्भ में आदिजाति परिवारों को पंचमहाल जिले में 732 करोड़ रुपए के 112 कार्यों तथा दाहोद जिले में 367 करोड़ रुपए के 1200 से अधिक कार्यों की भेंट दीं।

श्री भूपेंद्र पटेल ने पंचमहाल जिले के शहेरा, गोधरा, कालोल और घोघंबा के 79 गांवों के 130 तालाबों में पानम जलाशय का पानी पहुंचाने के लिए लगभग 406 करोड़ रुपए की उद्वहन सिंचाई पाइपलाइन योजना का लोकार्पण किया।

इस योजना के परिणामस्वरूप लगभग 86 हजार हेक्टेयर क्षेत्र को सिंचाई की सुविधा मिलेगी। पानम जलाशय से इस उद्देश्य के लिए 236 फीट ऊंचाई से पानी लिफ्ट करके 205 किलोमीटर लंबी वितरण पाइपलाइन द्वारा पहुंचाया जाएगा।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि पानी को ही विकास का मुख्य आधार माना जाता है। राज्य के अंबाजी से उमरगाम तक के आदिवासी बेल्ट में अब तक 3160 करोड़ रुपए के खर्च से 11 उद्वहन सिंचाई योजनाओं द्वारा 2 लाख 23 हजार एकड़ जमीन को सिंचाई सुविधा प्रदान की गई है।

उन्होंने आगे कहा कि राज्य सरकार के इस वर्ष के 4 लाख करोड़ रुपए के ऐतिहासिक बजट में भी आदिवासी क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए 485 करोड़ रुपए की व्यवस्था लिफ्ट इरिगेशन के लिए सुनिश्चित की गई है।

इतना ही नहीं, श्री पटेल ने कहा कि छोटाउदेपुर, दाहोद तथा पंचमहाल जिलों में नर्मदा आधारित लिफ्ट इरिगेशन के माध्यम से 18 तहसीलों के 51,480 हेक्टेयर क्षेत्र के किसानों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है।

उन्होंने पंचमहाल और दाहोद जिलों में मुख्य रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क नेटवर्क और पानी की सुविधाओं से जुड़े विकास कार्यों की भेंट भी दीं।

प्रधानमंत्री द्वारा घोषित आकांक्षी जिलों में शामिल दाहोद जिले को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने विकसित भारत के निर्माण के लिए विकसित गुजरात में नेतृत्व करने वाला इंस्पिरेशनल जिला बनने का आह्वान किया।

इस लोकार्पण और शिलान्यास समारोह में मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया, राज्य मंत्री श्री रमेशभाई कटारा, राज्य मंत्री श्री पी.सी. बरंडा, सांसद श्री राजपालसिंह जादव, सांसद श्री जसवंतसिंह भाभोर, राज्यसभा सांसद डॉ. जसवंतसिंह परमार, दोनों जिलों के विधायक, स्थानीय पदाधिकारी, दोनों जिलों के कलेक्टर सहित प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी तथा बड़ी संख्या में आदिवासी परिवार सहभागी हुए।

मंडल रेल प्रबंधक द्वारा जेतलसर, जूनागढ़ एवं सोमनाथ रेलवे स्टेशन तथा संबंधित रेल खंड का व्यापक निरीक्षण

(जीएनएस)। दिनांक 13 एवं 14 मार्च 2026 को भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा द्वारा जेतलसर, जूनागढ़ एवं सोमनाथ रेलवे स्टेशनों तथा संबंधित रेल खंड का व्यापक निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत उन्होंने धोला, जेतलसर जंक्शन, वडाल, केशोद, मालीया हाटीना, आद्री रोड, जूनागढ़, वेरावल तथा सोमनाथ रेलवे स्टेशनों का दौरा कर रेल परिचालन, संरक्षा व्यवस्था एवं यात्री सुविधाओं का गहन अवलोकन किया।

निरीक्षण के दौरान जेतलसर स्टेशन को अमृत स्टेशन के रूप में विकसित करने तथा स्टेशन के भावी पुनर्विकास (रिडेवलपमेंट) की योजना को लेकर मंडल रेल प्रबंधक ने मंडल के शाखा अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की। साथ ही सोमनाथ स्टेशन के मेजर रिडेवलपमेंट से संबंधित प्रगति कार्यों का निरीक्षण कर कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए।

मंडल रेल प्रबंधक ने गुजरात हैवी केमिकल लिमिटेड (GHCL) के अधिकारियों के साथ बैठक कर वेरावल से सवनी तक ब्रॉडगेज लाइन से कनेक्टिविटी स्थापित करने के विषय में विचार-विमर्श किया। धोला स्टेशन पर प्रस्तावित नए फुट ओवर ब्रिज (FOB) के निर्माण के संबंध में भी स्थल निरीक्षण कर इसकी व्यवहार्यता (फिजिबिलिटी) का आकलन किया गया। इसके अतिरिक्त वेरावल यार्ड को और अधिक आधुनिक एवं उन्नत बनाने के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश प्रदान किए गए।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी विकास कार्य निर्धारित गुणवत्ता मानकों एवं संरक्षा नियमों का पूर्ण अनुपालन करते हुए समय-सीमा के भीतर शीघ्र पूर्ण किए जाएं, ताकि रेल परिचालन क्षमता में वृद्धि हो तथा यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें।

निरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत मंडल रेल प्रबंधक द्वारा जेतलसर जंक्शन से सोमनाथ के मध्य स्थित स्टेशनों का विशेष संरक्षा निरीक्षण भी किया गया। इस दौरान ट्रैक संरचना, सिग्नलिंग प्रणाली, प्लेटफॉर्म व्यवस्था, यात्री सुविधाओं तथा सुरक्षा प्रबंधों की विस्तृत समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। अपने निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने, स्टेशन परिसरों में स्वच्छता बनाए रखने तथा यात्री सुविधाओं में सतत सुधार सुनिश्चित करने हेतु निरंतर प्रयास करने पर विशेष बल दिया।

अहमदाबाद मंडल: 6वीं डीआरएम चैंपियनशिप का भव्य समापन मैकेनिकल विभाग ने जीता 'ओवरऑल चैंपियन' का खिताब

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में खेल प्रतिभाओं को निखारने और कर्मचारियों के बीच टीम भावना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आयोजित '6वीं डीआरएम चैंपियनशिप' का साबरमती स्थित रेलवे स्पोर्ट्स ग्राउंड में रंगारंग समापन हुआ। अहमदाबाद मंडल स्पोर्ट्स एसोसिएशन (ADSA) द्वारा आयोजित इस खेल महाकुंभ में एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं मंडल रेल प्रबंधक (DRM) श्री वेद प्रकाश ने विजेता, उपविजेता सहित विभिन्न खेलों में विजेता खिलाड़ियों को मेडल, ट्रॉफी एवं सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया। वर्ष 2025-26 की इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप में मैकेनिकल विभाग ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के दम पर 'ओवरऑल विजेता' की ट्रॉफी पर कब्जा जमाया। वहीं, परिचालन (Operating) विभाग की टीम ने कड़ी टक्कर देते हुए रनरअप (उपविजेता) का स्थान प्राप्त किया।

समारोह के दौरान DRM श्री वेद प्रकाश ने सभी विजेता और उपविजेता टीमों सहित व्यक्तिगत स्पर्धाओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को मेडल, ट्रॉफी एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए डीआरएम ने कहा कि खेल न केवल शारीरिक फिटनेस बढ़ाते हैं, बल्कि कठिन कार्य परिस्थितियों में मानसिक संतुलन और सहकारिता की भावना भी विकसित करते हैं। यह आयोजन अहमदाबाद मंडल के सबसे बड़े खेल आयोजनों में से एक बनकर उभरा, जिसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित रहीं:

- सहभागिता का रिकॉर्ड: मंडल के विभिन्न विभागों, साबरमती कारख़ाना, साबरमती स्टोर और गांधीधाम एरिया मैनेजर की टीमों से लगभग 800 कर्मचारियों ने इस प्रतियोगिता में अपना कौशल दिखाया।
- विविध खेल और स्पर्धाएं: इस वर्ष चैंपियनशिप के दायरे को विस्तार देते हुए कुल 10 खेलों के अंतर्गत 38 विभिन्न इवेंट्स का सफल आयोजन किया गया।
- लोकप्रिय खेलों का रोमांच: * क्रिकेट: सबसे लोकप्रिय स्पर्धा रही जिसमें 16 टीमों ने हिस्सा लिया।
- फुटबॉल: मैदान पर 10 टीमों के बीच जोरदार मुकाबला देखा गया।
- वॉलीबॉल: 8 टीमों ने अपनी तकनीकी क्षमता का प्रदर्शन किया।
- इसके अतिरिक्त टेबल टेनिस, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज, स्विमिंग और एथलेटिक्स जैसी स्पर्धाओं में भी खिलाड़ियों ने अपना दमखम दिखाया।

डीआरएम चैंपियनशिप का मुख्य लक्ष्य रेल कर्मचारियों के दैनिक कार्य-तनाव को कम करना, उनके भीतर छिपी खेल प्रतिभा को मंच प्रदान करना और विभागों के बीच आपसी समन्वय (Inter-departmental Coordination) को बढ़ाना है। एडीएसए (ADSA) के तत्वावधान में आयोजित यह आयोजन फिटनेस और टीमवर्क के प्रति रेलवे की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक, शाखा अधिकारी, अधिकारिगण, स्पोर्ट्स एसोसिएशन के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में रेलकर्मी व उनके परिजन उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सरदारधाम में अखिल भारतीय सिविल सेवा तथा गुजरात लोक सेवा आयोग की परीक्षा में सफल हुए विद्यार्थियों को सम्मानित किया

▸▸ सरदारधाम संचालित सिविल सर्विस केंद्र तथा केळवणीधाम से प्रशिक्षण लेकर सफल हुए उम्मीदवारों का सम्मान समारोह आयोजित हुआ

▸▸ स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल्लभाई पानसेरिया की उपस्थिति

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- सरकारी संसाधनों और धन का उपयोग जब जनता के कल्याण के लिए सही दिशा में होता है, तब वह समाज के लिए आशीर्वाद रूप बनता है
- प्रशासन में गतिशीलता लाकर नागरिकों की कठिनाइयों को कम करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रोत्साहक उपस्थिति में रविवार को सरदारधाम से प्रशिक्षण प्राप्त कर अखिल भारतीय सिविल सेवा तथा गुजरात लोक सेवा आयोग में चयनित हुए युवाओं का सम्मान समारोह आयोजित हुआ। सरदारधाम से प्रशिक्षण प्राप्त कर यूपीएससी में सफलता प्राप्त करने वाले श्री तुषार मेंदपरा, श्री अनिकेत पटेल, श्री सावन सरावडिया, श्री स्नेह पटेल तथा श्री उत्पल पटेल को चेक एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री के करकमलों से ग्लोबल पाटीदार बिजनेस समिट 2026 का कर्टेन रेजर लॉन्च किया गया। सम्मान समारोह में पूर्व सिविल अधिकारी तथा समाज के दाताओं को भी सम्मानित किया गया।

यह उल्लेखनीय है कि सरदारधाम केळवणीधाम तथा सिविल सर्विस केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर इस वर्ष यूपीएससी की परीक्षा में 5 विद्यार्थी तथा गुजरात लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में 1337 विद्यार्थी सफल हुए हैं। सरदारधाम में इंटरव्यू प्रशिक्षण प्राप्त कर सफल हुए अन्य समाज के विद्यार्थियों को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

सरदारधाम में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री ने यूपीएससी और गुजरात लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में सफल हुए उम्मीदवारों को बधाई देते हुए कहा कि परीक्षा पास करके आपने अपनी बौद्धिक क्षमता सिद्ध की है, लेकिन अब इस बुद्धिशक्ति का लोकहित के लिए सदुपयोग करने का वास्तविक समय शुरू हुआ है। आपकी आगामी कार्यशैली और प्रशासनिक निर्णय ही आपके करियर की वास्तविक पहचान बनेंगे।

प्रशासनिक सेवा में जुड़ने वाले युवाओं को प्रोत्साहन देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी सेवा केवल नौकरी नहीं है बल्कि पुण्य कमाने का एक उत्कृष्ट अवसर है। सरकारी संसाधनों तथा धन का उपयोग जब जनता के कल्याण के लिए सही दिशा में होता है, तब वह समाज के लिए आशीर्वाद बन जाता है। जनता के प्रति अधिकारियों का व्यवहार संवेदनशील होना चाहिए, ताकि वे अपने माता-पिता, संस्था और समाज का गौरव बढ़ा सकें। आगे मुख्यमंत्री ने प्रशासन में अनुशासन और सुशासन के महत्व पर बल देते हुए कहा कि सभी नीति-नियम जनता की सुविधा के लिए बनाए गए हैं, इसलिए प्रशासन में गतिशीलता लाकर नागरिकों की कठिनाइयों को कम करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गुजरात की आर्थिक नींव मजबूत हुई है। 'अमृतकाल' के इस समय में नए नियुक्त अधिकारियों के पास वर्ष 2047 तक देश की सेवा करने का बड़ा अवसर है। मुख्यमंत्री ने विकसित गुजरात से विकसित भारत के संकल्प को सिद्ध करने के लिए युवा अधिकारी पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य कर देश के विकास में अपना योगदान देने का आग्रह किया।

सम्मान समारोह में स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल्लभाई पानसेरिया ने सफलता प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों को बधाई दी। उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवाओं से अपने माता-पिता के परिश्रम और सपनों को हमेशा ध्यान में रखकर मेहनत करने का अनुरोध किया।

मंत्री ने प्रशासनिक सेवा में शामिल हो रहे युवाओं से अनुरोध किया कि सेवा में जुड़ने के बाद उनका दृष्टिकोण 'अंत्योदय' अर्थात समाज के सुदूरवर्ती तथा गरीब व्यक्ति के उत्थान के लिए होना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वतंत्र भारत में सिविल सेवा के लिए जो उच्च विचार प्रस्तुत किए थे, उन्हें साकार करने की जिम्मेदारी नए अधिकारियों के कंधों पर है।

श्री पानसेरिया ने शिक्षा और समाज सेवा के उद्देश्य से संस्था को सहयोग देने वाले दाताओं की उदारता की भी सराहना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यहां से प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए युवा किसी भी भेदभाव या अहंकार के बिना श्रेष्ठ कार्य करके समाज तथा देश का नाम रोशन करेंगे।

समारोह में सरदारधाम के प्रमुख सेवक श्री गगजीभाई सुतरिया ने स्वागत संबोधन करते हुए सभी का स्वागत किया।

इस सम्मान समारोह में सरदारधाम के ट्रस्टी, दाता, सामाजिक एवं राजनीतिक अग्रणी, आमंत्रित महानुभाव, संस्था के फैकल्टी सदस्य सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी व अभिभावक उपस्थित रहे।

सूरत नगर आयुक्त के दौरे में अनुपस्थित रहने पर डॉ. अजीत भट्ट को निलंबित किया गया, माफी मांगने के बाद फैसले को रद्द करने पर चर्चा चल रही है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत नगर निगम के नगर आयुक्त एम. नागराजन, ड्यूटी पर आते ही शहर की स्वच्छता को प्राथमिकता देते थे और सफाई कार्य के संबंध में सख्त रुख अपनाते हुए सुबह से ही सफाई कार्य का व्यक्तिगत निरीक्षण करने निकल जाते थे। ऐसे में, केंद्रीय क्षेत्र के सफाई अभियान के दौरान पूर्व सूचना के बावजूद, उप स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अजीत भट्ट या उनके अधीनस्थ अधिकारी मौके पर मौजूद नहीं थे। डॉ. अजीत भट्ट ने फोन उठाने की जहमत तक नहीं उठाई। इससे नगर आयुक्त नाराज हो गए और उन्होंने डॉ. अजीत भट्ट को निलंबित करने का निर्णय लिया। सूरत नगर निगम के कुछ अधिकारी डॉ. अजीत भट्ट के निलंबन के खिलाफ थे और उन्हें निलंबित होने से बचाने के लिए निलंबन आदेश में देरी की गई। निलंबन के संबंध में, डॉ. भट्ट ने पहले तो यह कहकर आपत्ति जताई कि अगर मैं सफाई के काम के लिए जोन में वापस जाता हूं, तो कार्यालय का काम कौन करेगा? लेकिन डॉ. अजीत भट्ट जहां भी जाते हैं, वहां कर्मचारियों की उपस्थिति की जांच करते हैं और सफाई कर्मचारियों को फिर से परेशान करते हैं। डॉ. अजीत भट्ट यह तय कर रहे हैं कि सफाई कर्मचारियों को किस क्षेत्र का काम दिया जाए। इसके बाद, नगर आयुक्त के आदेश की अवहेलना करते हुए, डॉ. अजीत भट्ट ने अपने कर्तव्य के प्रति गंभीर लापरवाही दिखाई है और वरिष्ठ अधिकारी के आदेश का पालन नहीं किया है, जो कर्तव्य की बड़ी अवहेलना है। हालांकि, माफी मांगने के आधार पर उनका निलंबन रद्द करने का निर्णय संदेह पैदा करता है। यह जानना जरूरी है कि क्या नगर आयुक्त ने किसी के दबाव में निलंबन आदेश रद्द किया है या कुछ और कारण है।

केरल विधानसभा चुनाव: 86 सीटों पर उतरेगी CPM, धर्मदम से फिर मैदान में पिनाराई विजयन

(जीएनएस)। तिरुवनंतपुरम। केरल में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। वामपंथी राजनीति की प्रमुख पार्टी Communist Party of India (Marxist) ने राज्य की 140 सदस्यीय विधानसभा के लिए अपने उम्मीदवारों की पहली सूची जारी करते हुए 86 सीटों पर चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है। पार्टी नेतृत्व के इस फैसले के साथ ही राज्य में चुनावी समीकरणों और रणनीतियों की तस्वीर भी काफी हद तक स्पष्ट होने लगी है। पार्टी की ओर से घोषित सूची के अनुसार 86 सीटों में से 56 मौजूदा विधायकों को एक बार फिर से टिकट दिया गया है। पार्टी नेतृत्व ने अपने कई अनुभवी और मजबूत नेताओं पर भरोसा कायम रखते हुए उन्हें दोबारा मैदान में उतारा है, जबकि कुछ सीटों पर नए चेहरों को मौका देकर संगठन में संतुलन और युवा नेतृत्व को बढ़ावा देने की कोशिश भी की गई है। मुख्यमंत्री Pinarayi Vijayan एक बार फिर कन्नूर जिले की Dharmadam विधानसभा सीट से चुनाव लड़ेंगे। यह वही सीट है जहां से उन्होंने पिछले चुनाव में जीत हासिल की थी और राज्य में वाम मोर्चे की सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। धर्मदम सीट को पिनाराई विजयन का मजबूत राजनीतिक गढ़ माना जाता है और यहां पार्टी संगठन काफी मजबूत स्थिति में है।

पार्टी ने पूर्व स्वास्थ्य मंत्री K. K. Shailaja को भी एक बार फिर चुनावी मैदान में उतारा है। उन्हें इस बार कन्नूर जिले की Peravoor सीट से उम्मीदवार बनाया गया है। के. के. शैलजा राज्य में अपने कार्यकाल के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने और विशेष रूप से महामारी के समय किए गए कार्यों के कारण काफी लोकप्रिय रही हैं। पार्टी को उम्मीद है कि उनकी लोकप्रियता चुनाव में सकारात्मक परिणाम दिलाने में मदद करेगी।

वामपंथी गठबंधन Left Democratic Front के तहत बाकी सीटें सहयोगी दलों को दी जाएंगी। गठबंधन में शामिल अन्य दलों के साथ सीटों के बंटवारे को लेकर पहले ही व्यापक चर्चा हो चुकी है और अब विभिन्न दल अपने-अपने उम्मीदवारों की घोषणा करने की तैयारी में हैं। वाम मोर्चा केरल की राजनीति में लंबे समय से एक मजबूत राजनीतिक शक्ति रहा है और हर चुनाव में कांग्रेस नीत संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे के साथ उसका सीधा मुकाबला देखने को मिलता है।

राज्य में चुनाव आयोग द्वारा घोषित कार्यक्रम के अनुसार केरल की सभी 140 विधानसभा सीटों के लिए मतदान 9 अप्रैल को कराया जाएगा। इसके बाद मतगणना 4 मई को होगी, जब चुनाव परिणामों के साथ यह स्पष्ट हो जाएगा कि राज्य में अगली सरकार किसकी बनेगी।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस बार का चुनाव कई मायनों में महत्वपूर्ण होने वाला है। एक ओर सत्तारूढ़ वाम मोर्चा अपनी सरकार की उपलब्धियों के आधार पर जनता से दोबारा समर्थन मांग रहा है, वहीं विपक्षी दल सरकार की नीतियों और निर्णयों को मुद्दा बनाकर चुनावी चुनौती पेश करने की तैयारी में हैं। चुनाव के मद्देनजर राज्य में राजनीतिक दलों ने अपने संगठन को सक्रिय करना शुरू कर दिया है। विभिन्न क्षेत्रों में जनसभाओं, बैठकों और प्रचार अभियानों की योजना बनाई जा रही है। आने वाले दिनों में राज्य में चुनावी रैलियों और राजनीतिक गतिविधियों का दौर और तेज होने की संभावना है।

केरल की राजनीति में उम्मीदवारों की घोषणा को चुनावी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। ऐसे में CPM द्वारा 86 सीटों पर उम्मीदवार उतारने का फैसला यह संकेत देता है कि पार्टी इस चुनाव में अपनी पारंपरिक ताकत के साथ मैदान में उतरने की तैयारी कर चुकी है। अब सभी की नजरें इस बात पर टिकी हैं कि चुनाव प्रचार के दौरान राजनीतिक दल किस तरह के मुद्दों को लेकर जनता के बीच जाते हैं और मतदाता किसे अपना समर्थन देते हैं।

सूरत इंटरनेशनल ऑटो एक्सपो में उमड़ा जनसैलाब, रविवार को 50 हजार से अधिक दर्शकों ने बनाया नया रिकॉर्ड

(जीएनएस)। सूरत। हीरा और टेक्सटाइल उद्योग के लिए प्रसिद्ध सूरत शहर इन दिनों ऑटोमोबाइल उत्साह से भी सराबोर नजर आ रहा है। शहर में आयोजित Surat International Auto Expo 2026 में रविवार को दर्शकों की ऐसी भीड़ उमड़ी कि पिछले सभी रिकॉर्ड टूट गए। एक ही दिन में 50 हजार से अधिक लोगों ने एक्सपो का दौरा किया, जिससे आयोजन स्थल पर दिनभर उत्साह, रोमांच और चहल-पहल का माहौल बना रहा। भारी भीड़ के कारण पार्किंग व्यवस्था भी कम पड़ गई और वाहनों की लंबी कतारें देखने को मिलीं। इस भव्य आयोजन का आयोजन The Southern Gujarat Chamber of Commerce and Industry द्वारा किया गया है, जिसमें देश-विदेश की प्रमुख ऑटोमोबाइल कंपनियां अपने नवीनतम मॉडल, तकनीक और डिजाइन का प्रदर्शन कर रही हैं। आयोजकों के अनुसार शुक्रवार और शनिवार को लगभग 20 हजार से अधिक लोग एक्सपो देखने पहुंचे थे, लेकिन रविवार को छुट्टी का दिन होने के कारण परिवारों के साथ बड़ी संख्या में लोग पहुंचे और एक ही दिन में 50 हजार से अधिक विज़िटर्स का आंकड़ा पार हो गया। इस तरह तीन दिनों में कुल मिलाकर 70 हजार से अधिक लोगों ने एक्सपो का दौरा किया, जो इस आयोजन की लोकप्रियता को दर्शाता है।

चैंबर के अध्यक्ष Nikhil Madrasi ने बताया कि रविवार सुबह से ही लोगों की भीड़ एक्सपो स्थल की ओर उमड़ने लगी थी। पार्किंग क्षेत्र में वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और कुछ ही समय में पूरी पार्किंग भर गई। कई लोगों को अपने वाहन दूर खड़े करके पैदल ही एक्सपो स्थल

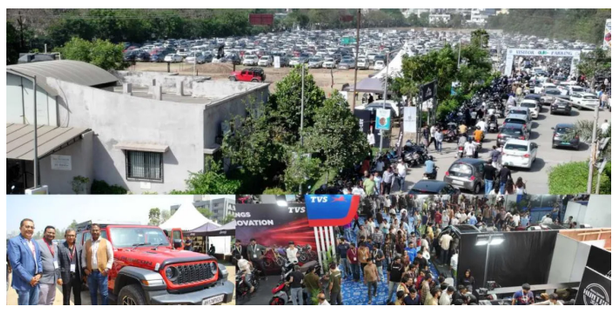

तक पहुंचना पड़ा। इसके बावजूद लोगों के उत्साह में कोई कमी नहीं दिखी और दिनभर एक्सपो में दर्शकों की भीड़ बनी रही।

एक्सपो में आने वाले लोगों को देश-विदेश की कई नामी ऑटोमोबाइल कंपनियों के नवीनतम वाहन देखने और उनके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला। अत्याधुनिक तकनीक से लैस नई कारें, इलेक्ट्रिक वाहनों के आधुनिक मॉडल, आकर्षक डिजाइन वाले टू-व्हीलर और एडवांस फीचर्स से सुसज्जित एसयूवी ने दर्शकों का खास ध्यान खींचा। कई लोग अपने परिवार के साथ गाड़ियों के मॉडल देख रहे थे, वहीं कई युवा नई तकनीक और फीचर्स के बारे में विशेषज्ञों से जानकारी लेते दिखाई दिए।

एक्सपो का एक बड़ा आकर्षण स्टंट बाइक शो भी रहा। पेशेवर स्टंट राइडर्स ने तेज रफ्तार और संतुलन का शानदार प्रदर्शन करते हुए ऐसे रोमांचक करतब दिखाए कि दर्शकों ने तालियों और उत्साह के साथ उनका स्वागत किया। इस शो ने खासकर युवाओं और बच्चों को काफी आकर्षित किया और बड़ी संख्या में लोग इसे देखने के लिए जुटे रहे।

इसी तरह एक्सपो में तैयार किया गया प्रूविंग ग्राउंड भी लोगों के बीच चर्चा का विषय बना रहा। यह एक विशेष ट्रैक था, जहां ऊबड़-खाबड़ रास्तों और चुनौतीपूर्ण मोड़ों पर वाहनों की क्षमता और ताकत का प्रदर्शन किया गया। कई विज़िटर्स ने इस ट्रैक पर गाड़ियों की राइड का अनुभव लिया और आधुनिक वाहनों की पावर और प्रदर्शन को करीब से महसूस किया। इस अनुभव ने ऑटोमोबाइल प्रेमियों के लिए एक्सपो को और भी रोमांचक बना दिया।

रविवार को सूरत नगर निगम के आयुक्त M. Nagarajan भी एक्सपो देखने पहुंचे। उन्होंने विभिन्न ऑटोमोबाइल कंपनियों के स्टॉल का दौरा किया और कई गाड़ियों का अवलोकन किया। इसके साथ ही उन्होंने प्रूविंग ग्राउंड पर जीप राइड का अनुभव भी लिया। उन्होंने इस आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के ऑटो एक्सपो शहर के ऑटोमोबाइल क्षेत्र को नई दिशा देने के साथ-साथ लोगों को आधुनिक तकनीक से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एक्सपो में आए कई लोगों ने नई गाड़ियों के प्रति विशेष रुचि दिखाई। कई विज़िटर्स ने अलग-अलग कंपनियों के कार और टू-व्हीलर मॉडल्स के बारे में विस्तार से जानकारी ली और मौके पर ही स्पॉट बुकिंग भी कराई। कंपनियों द्वारा दिए जा रहे विशेष ऑफर्स और आकर्षक फाइनेंस योजनाओं के कारण भी लोगों में खरीदारी को लेकर उत्साह देखा गया। आयोजकों के अनुसार कई कंपनियों को एक्सपो के दौरान अच्छा व्यावसायिक प्रतिसाद मिला है।

आधुनिक वाहनों के साथ-साथ एक्सपो में प्रदर्शित विंटेज कारों ने भी लोगों का ध्यान खींचा। यहां 1930 से पहले की 11 दुर्लभ और ऐतिहासिक महत्व की कारों को प्रदर्शित किया गया, जिन्हें देखने के लिए ऑटोमोबाइल प्रेमियों में खास उत्साह दिखाई दिया। इन विंटेज कारों के डिजाइन और इतिहास के बारे में जानकर लोग खासे प्रभावित हुए और कई लोग इनके साथ फोटो खिंचवाते नजर आए।

रविवार को उमड़ी भारी भीड़ और विज़िटर्स का उत्साह इस बात का प्रमाण है कि सूरत में ऑटोमोबाइल के प्रति लोगों की दिलचस्पी लगातार बढ़ रही है। आयोजकों का मानना है कि इस तरह के आयोजन शहर के व्यापारिक और औद्योगिक माहौल को भी नई ऊर्जा देते हैं।

आयोजकों को उम्मीद है कि एक्सपो के अंतिम दिन सोमवार को भी बड़ी संख्या में लोग यहां पहुंचेंगे। सुबह 10 बजे से शाम 7 बजे तक चलने वाले इस आयोजन में आधुनिक तकनीक, नई गाड़ियों और रोमांचक गतिविधियों का अनुभव लेने के लिए लोगों का उत्साह लगातार बना हुआ है। सूरत इंटरनेशनल ऑटो एक्सपो 2026 न केवल ऑटोमोबाइल कंपनियों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित हो रहा है, बल्कि शहर के लोगों के लिए भी यह एक यादगार और रोमांचक अनुभव बन गया है।

9/11 जैसा हमला कर ईरान को फंसाने की साजिश? तेहरान ने अमेरिका पर लगाया गंभीर आरोप

(जीएनएस)। तेहरान। पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के बीच ईरान की ओर से एक गंभीर और विवादित दावा सामने आया है। ईरान की राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े वरिष्ठ नेता Ali Larijani ने आरोप लगाया है कि अमेरिका में 9/11 जैसे बड़े आतंकी हमले की साजिश रची जा सकती है और उसका दोष ईरान पर मढ़ने की कोशिश की जा सकती है। उन्होंने कहा कि कुछ प्रभावशाली नेटवर्क और गुप्त ताकतें ऐसी घटना को अंजाम देकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ईरान को बदनाम करने का प्रयास कर सकती हैं। हालांकि उनके इस दावे की अभी तक किसी भी आधिकारिक एजेंसी या स्वतंत्र स्रोत से पुष्टि नहीं हुई है और इसे फिलहाल सोशल मीडिया पर चल रही थ्योरी या आरोप के रूप में देखा जा रहा है।

लारीजानी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर एक पोस्ट में कहा कि उन्हें कुछ ऐसी सूचनाएं मिली हैं जिनसे यह संकेत मिलता है कि कुछ लोग अमेरिका में September 11 attacks जैसी घटना दोहराने की योजना बना सकते हैं। उनका दावा है कि इस संभावित साजिश में कुख्यात कारोबारी नेटवर्क से जुड़े लोग भी शामिल हो सकते हैं, जिनका संबंध दिवंगत अमेरिकी फाइनेंसर Jeffrey Epstein के नेटवर्क से बताया जाता है। लारीजानी ने यह भी कहा कि यदि भविष्य में अमेरिका में कोई बड़ा आतंकी हमला होता है और उसका आरोप तुरंत ईरान पर लगाया जाता है, तो दुनिया को यह समझना चाहिए कि संभवतः यह पहले से तैयार की गई रणनीति का हिस्सा हो सकता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ईरान किसी भी प्रकार की आतंकी कार्रवाई का समर्थन नहीं करता और उसका अमेरिकी जनता से कोई युद्ध या दुश्मनी नहीं है।

उन्होंने अपने बयान में कहा कि ईरान की नीति स्पष्ट रूप से आतंकवाद के खिलाफ है और देश की सुरक्षा नीति का उद्देश्य केवल अपने क्षेत्र और लोगों की रक्षा करना है। लारीजानी ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से अपील की कि किसी भी बड़ी घटना के बाद बिना जांच-पड़ताल के किसी देश पर आरोप लगाने के बजाय तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर निर्णय लिया जाना चाहिए।

इस बयान के बाद सोशल मीडिया और अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक हलकों में चर्चा तेज हो गई है। कई विश्लेषकों का मानना है कि यह बयान ऐसे समय आया है जब मध्य पूर्व में पहले से ही तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है और विभिन्न देशों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है।

लारीजानी के बयान के संदर्भ में 11 सितंबर 2001 की घटना को भी याद किया जा रहा है। उस दिन अमेरिका में हुए आतंकवादी हमलों ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया था। September 11 attacks के दौरान आतंकियों ने चार यात्री विमानों का अपहरण कर लिया था। इनमें से दो विमानों को न्यूयॉर्क स्थित World Trade Center की जुड़वां इमारतों से टकराया गया था, जिससे वे ढह गईं। तीसरा विमान अमेरिकी रक्षा मुख्यालय The Pentagon से टकराया था, जबकि चौथा विमान पेनसिल्वेनिया में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इन हमलों में लगभग 3,000 लोगों की जान चली गई थी और यह आधुनिक इतिहास के सबसे बड़े आतंकी हमलों में से एक माना जाता है। इसी बीच सोशल मीडिया पर एक और दावा तेजी से फैल रहा है। कुछ पोस्ट में कहा जा रहा है कि अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य के लॉस एंजेलिस शहर में स्थित U.S. Bank Tower को संभावित निशाना बनाया जा सकता है। हालांकि इस तरह के दावों की किसी भी अमेरिकी सुरक्षा एजेंसी या सरकारी संस्था ने पुष्टि नहीं की है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस प्रकार की खबरें अक्सर सोशल मीडिया पर अफवाहों या षड्यंत्र सिद्धांतों के रूप में फैलती हैं, जिनकी सत्यता की पुष्टि करना आवश्यक होता है।

कई विश्लेषकों का यह भी मानना है कि वर्तमान समय में डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया के कारण अंतरराष्ट्रीय राजनीति से जुड़ी खबरें और दावे बहुत तेजी से फैल जाते हैं। कई बार बिना सत्यापन के भी ऐसी जानकारी लोगों तक पहुंच जाती है, जिससे भ्रम की स्थिति पैदा हो सकती है।

इस पूरे मामले में अभी तक अमेरिका की ओर से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी इन दावों को सावधानी के साथ देख रहा है, क्योंकि किसी भी संभावित सुरक्षा खतरे से जुड़ी जानकारी की पुष्टि होना बेहद जरूरी होता है। फिलहाल यह स्पष्ट है कि ईरान की ओर से लगाया गया यह आरोप एक गंभीर राजनीतिक बयान है, लेकिन इसकी पुष्टि किसी स्वतंत्र स्रोत से नहीं हुई है। ऐसे में इसे अभी एक दावा या आशंका के रूप में ही देखा जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसी भी बड़े आरोप या सुरक्षा संबंधी चेतावनी को तथ्यों और आधिकारिक जांच के आधार पर ही स्वीकार किया जाना चाहिए, ताकि गलत सूचनाओं से पैदा होने वाले तनाव से बचा जा सके।

पत्रकारिता पर प्रतिबंध क्यों? सबसे बड़ा सवाल सच्चाई सामने लाने वाले पत्रकारों की सुरक्षा, आय और स्वतंत्रता का है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। एक लेखक ने अखबार के बारे में लिखा, जिसे समाज का दर्पण कहा जाता है, कि "सरकार के बिना अखबार तो हो सकता है, लेकिन अखबार के बिना सरकार कभी नहीं हो सकती।" क्योंकि अखबार का सत्ताधारी दल से कोई संबंध नहीं होता। लेकिन अगर अखबार ही न हो, तो जनता को सरकार के अच्छे-बुरे कामों के बारे में कैसे पता चलेगा? इसीलिए अखबार को दुनिया का चौथा स्तंभ कहा जाता है। अखबारों की दुनिया से तात्पर्य पत्रकारिता की दुनिया से है, चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। हाल ही में, पत्रकारिता जगत में गंभीर हमलों से लेकर हत्याओं तक की घटनाएं घट रही हैं और इसका कारण अखबारों में छपी सच्चाई और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से सबूतों के साथ समाज को दिखाई गई सच्चाई है।

यहां हम किसी एक अखबार की बात नहीं कर रहे हैं। तो फिर दैनिक, अर्धसाप्ताहिक, साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक पत्रिका की बात क्यों नहीं? इन सभी पत्रिकाओं के कर्मचारी पत्रकार की परिभाषा में आते हैं। इसमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी शामिल है। असली पत्रकार तो सिर्फ उन्हीं लोगों को निशाना बनाते हैं जिनके काले कारनामे अखबारों के जरिए समाज में उजागर होते हैं, और जो लोग ऐसे काले कारनामे करते हैं, वे अपने राजनीतिक सहयोगियों की

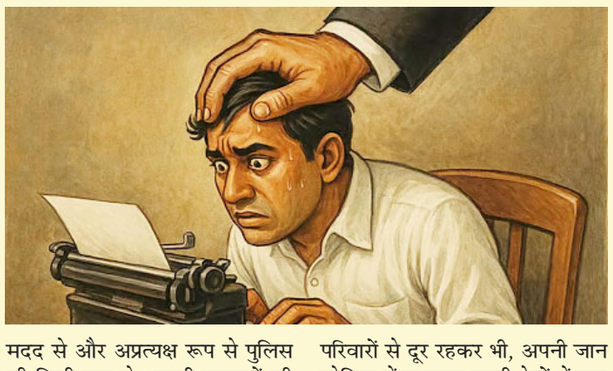

मदद से और अप्रत्यक्ष रूप से पुलिस की मिलीभगत से असली पत्रकारों की हत्या करते हैं।

आज भी, हमलों के शिकार होकर अपनी जान गंवाने वाले पत्रकार, अपने परिवारों से दूर रहकर भी, अपनी जान जोखिम में डालकर खाड़ी देशों में चल रहे युद्ध की खबरें और तस्वीरें प्रसारित करने का काम कर रहे हैं, युद्ध के छोटे से छोटे विवरण से लेकर बड़े हमलों तक, मिसाइलों, बम विस्फोटों और राइफलों, तोपों और मशीनगनों की गड़गड़ाहट के बीच भी।

तो फिर राज्य सरकार या केंद्र सरकार द्वारा ऐसे पत्रकारों को जेल में रखने का फतवा जारी करना कितना उचित है ताकि वे अन्य काम न कर सकें? सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब राजा का बेटा राजा बनता है, किसी नेता का बेटा, चाहे वह पागल हो या उसका लंबा करियर या प्रतिभा न हो, अयोग्य होते हुए भी उच्च पद पर बिठा दिया जाता है, तो पत्रकारों के लिए फतवा जारी करने और उन्हें जेल में रखने का क्या कारण है? एक ओर तो विरोधी बार-बार उनके भाई-भतीजावाद का मजाक उड़ाते हैं, वहीं दूसरी ओर, इन नेताओं के बेटों और बेटियों को वारिस मानकर उच्च पदों पर बिठाने वाले और जनता की आंखों में धूल झोंकने वाले नेता सत्ता के भूखे नेताओं के सिवा कुछ नहीं हैं। जहां पत्रकार अपनी जान जोखिम में डालकर सच्ची और सबूत आधारित खबरें प्रकाशित करते हैं, जब ऐसे पत्रकार बड़े नेताओं का पर्दाफाश करने वाली खबरें प्रकाशित करते हैं, तो बड़े नेता और उनके साथी उन पत्रकारों पर जबरन वसूली, तोड़फोड़ और राजद्रोह जैसे अपराधों का आरोप लगाकर उन्हें पुलिस के हाथों जेल भेज देते हैं, लेकिन वे वापस नहीं लौटते। पत्रकारों का काम दो तराजू की तरह है, जिन पर वे नकारात्मक और सकारात्मक खबरें प्रकाशित करते हैं।

अब सवाल पत्रकारों की आमदनी का है

आज के हालात में जब गृहिणियां परेशान हैं और महंगाई आसमान छू रही है, जब हर किसी को अपने पेशे के साथ-साथ दूसरा काम भी करना पड़ रहा है ताकि घर का खर्च चल सके, तो एक पत्रकार के पत्रकारिता के साथ-साथ कोई दूसरा काम करने या अपने बच्चों को पत्रकारिता में सहारा देने में क्या बुराई है? जब एक पत्रकार को अपने परिवार का खर्च, बच्चों की शिक्षा का खर्च, किराए के घर का किराया, बिजली, गैस, रखरखाव और पेट्रोल का खर्च, और घर की सारी जिम्मेदारियां उठानी पड़ती हैं, तो उसकी कम तनख्वाह इन खर्चों को पूरा करने के लिए काफी नहीं होती, तो फिर दूसरा काम करने में क्या बुराई है? जब वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री, आईपीएस, आईएस अधिकारी, सेवानिवृत्त अधिकारी और पूर्व मंत्री अपने रिश्तेदारों, भरोसेमंद दोस्तों और परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर जाने-माने बिल्डरों के साथ साझेदारी करके सरकारी वेतन और भत्तों के अलावा अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं और अपने प्रमोटरों के माध्यम से बड़े-बड़े प्रोजेक्ट, शोरूम, जमीन और निर्माण कार्यों में निवेश कर सकते हैं, तो पत्रकारों द्वारा अपने परिवार का भरण-पोषण करने और समाज का दर्पण माने जाने वाले पत्रकारिता जगत को जीवित रखने के लिए अतिरिक्त आय अर्जित करना या छोटा-बड़ा व्यवसाय करना अपराध क्यों माना जाता है?